Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 16

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

22 शअबान 1441 हिजरी कमरी 16 शहादत 1399 हिजरी शमसी 16 अप्रैल 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

मेरा मज़हब यह है कि चमत्कारों ने ऐसा प्रभाव नहीं किया जैसा कि सहाबा किराम रज़ि के पवित्र नमूनों और परिवर्तनों ने लोगों को हैरान किया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ पर बड़े-बड़े शरीर आकर तौबा करने वाले हुए वे क्यों? इस महान तबदीली ने जो सहाबा रज़ि में हुई और उनके अनुकरण योग्य नमूनों ने उनको शर्मिंदा किया।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

यह एक विश्वसनीय बात है कि अगर कोई आदमी अपने अंदर अपने मानव जाति के लिए हमदर्दी का जोश नहीं पाता वह कंजूस है। अगर मैं एक राह देखूं जिसमें भलाई और ख़ैर है तो मेरा फ़र्ज़ है कि मैं पुकार पुकार कर लोगों को बतलाऊं। इस बात की परवाह नहीं होती कि कोई इस पर अनुकरण करता है या नहीं।

किस बशनोद या नशनोद मन गफ़त गोए मीकनम

अगर एक आदमी भी ज़िन्दा तबीयत का निकल आए तो काफ़ी है। मैं यह बात खोल कर वर्णन करता हूँ कि मेरे उचित यह बात नहीं है कि जो कुछ में आप लोगों को कहता हूँ मैं सवाब की नीयत से कहता हूँ। नहीं ! मैं अपने नफ़स में इंतिहा दर्जा का जोश और दर्द पाता हूँ यद्यपि वह कारण नहीं जानते हैं कि क्यों ये जोश है मगर इस में ज़रा भी शक नहीं कि यह जोश ऐसा है कि मैं रुक नहीं सकता। इसलिए आप लोग इन बातों को ऐसे आदमी की वसीयत समझ कर कि फिर शायद मिलना नसीब न हो। इन पर ऐसे कारबन्द हों कि एक नमूना हो और उन आदमियों को जो हम से दूर हैं अपने कर्म और कथन से समझा दो। अगर यह बात नहीं है और अनुकरण की ज़रूरत नहीं है तो फिर मुझे बतलाओ कि यहां आने से क्या अभिप्राय है। मैं छुपी हुई तबदीली नहीं चाहता। स्पष्ट तबदीली अभीष्ट है ताकि मुख़ालिफ़ शर्मिंदा हों और लोगों के दिलों पर एक तरफ़ से रोशनी पड़े और वे ना उम्मीद हो जाएं कि यह मुख़ालिफ़ अपमान में पड़े हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ पर बड़े-बड़े शरीर आकर तौबा करने वाले हुए वे क्यों? इस महान तबदीली ने जो सहाबा रज़ि में हुई और उनके अनुकरण योग्य नमूनों ने उनको शर्मिंदा किया।

इकरमा का पवित्र नमूना

इकरमा का हाल तुम ने सुना होगा। उहद की मुसीबत का बानी यही था और इस का बाप अबु-जहल था लेकिन आख़िर उसे सहाबा किराम रज़ि के नमूनों ने शर्मिंदा कर दिया। मेरा मज़हब यह है कि चमत्कारों ने ऐसा प्रभाव नहीं किया जैसा कि सहाबा किराम रज़ि के पवित्र नमूनों और परिवर्तनों ने लोगों को हैरान किया। लोग हैरान हो गए कि हमारा चचेरा कहाँ से कहाँ पहुंचा। आख़िर उन्होंने अपने आपको धोखा खाया हुआ समझा। इकरमा ने एक समय ज़ात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हमला किया और दूसरे वक़्त लश्कर कुफ़्फ़ार को ध्वस्त किया। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में सहाबा रज़ि ने जो पवित्र नमूने दिखाए हैं हम आज फ़ख़र के साथ उनको दलीलों और आयतों के रंग में वर्णन कर सकते हैं। अत: इकरमा ही का नमूना देखो कि कुफ्र के दिनों में कुफ्र। गर्व इत्यादि बुरे गुण अपने अंदर रखता था और चाहता था कि बस चले तो इस्लाम को दुनिया से समाप्त कर दे मगर जब ख़ुदा तआला के फ़ज़ल ने इस का हाथ पकड़ा और वह इस्लाम को स्वीकार करने वाला हुआ तो ऐसे आचरण पैदा हुए कि वह गर्व और अंहकार नाम तक को बाक़ी न रहा और विनय और विनम्रता पैदा हुई कि वह इस्लाम के विनय की एक दलील हो गया और इस्लाम की सच्चाई के लिए एक दलील ठहरा। एक अवसर पर कुफ़्फ़ार से मुक़ाबला हुआ। इकरमा लश्कर इस्लाम का सिपहसालार था। कुफ़्फ़ार ने बहुत सख़्त मुक़ाबला किया। यहां तक कि लश्कर इस्लाम की हालत क़रीब हारने के हो गई। इकरमा ने जब देखा तो घोड़े से उतरा। लोगों ने कहा कि आप क्यों उतरते हैं। शायद इधर उधर होने का वक़्त हो तो घोड़ा मदद दे। तो उसने कहा। इस वक़्त मुझे वह ज़माना याद आ गया है जब मैं पैग़म्बर ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मुक़ाबला करता था। मैं चाहता हूँ कि जान देकर गुनाहों का कफ़्फ़ारा करूँ। अब देखिए कि कहाँ से कहाँ तक हालत पहुंची कि बार-बार प्रशंसा से याद किया गया। यह याद रखो कि ख़ुदा तआला की रज़ा उन लोगों के साथ होती है जो उस की रज़ा अपने अन्दर जमा कर लेते हैं। अल्लाह तआला ने कई स्थानों पर उन लोगों को रज़ी अल्लाह अन्हुम कहा है। मेरी नसीहत यह है कि हर आदमी उन आतरण की पाबंदी करे।

सहीह आस्था और नेक कर्म

इस के अतिरिक्त दो हिस्से और भी हैं जिन को समक्ष रखना सच्ची श्रद्धा रखना वाले का काम होना चाहिए। उनमें से एक सहीह आस्था का है। यह अल्लाह तआला का कमाल फ़ज़ल है कि उसने कामिल और सम्पूर्ण अक़ीदा की राह हम को अपने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के द्वारा बिना किसी कठिनाई और मेहनत के दिखाई है। वह राह जो आप लोगों को इस ज़माना में दिखाई गई है। बहुत से आलिम अभी तक इस से वंचित हैं। अत: ख़ुदा तआला के इस फ़ज़ल और नेअमत का शुक्र करो और वह शुक्र यही है कि सच्चे दिल से उन नेक कर्मों को करो जो सहीह अक़ीदा के बाद दूसरे हिस्सा में आते हैं और अपनी व्यावहारिक हालत से मदद लेकर दुआ माँगो कि वे इन सहीह अक़ीदों पर दृढ़ता पूर्वक रखे और नेक कर्मों की तौफ़ीक़ बख़्शे। हिस्सा इबादत में रोज़ा , नमाज़ ज़कात इत्यादि बातें शामिल हैं। अब ख़्याल करो कि जैसे नमाज़ ही है। यह दुनिया में आई है लेकिन दुनिया से नहीं आई। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि قُرَّةُ عَيْنِيْ فِي الصَّلٰوةِ۔

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 127 से 129 प्रकाशन कादियान)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

पैग़ाम

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़

दिनांक 27 मार्च 2020 स्थान दफ़्तर इस्लामाबाद,यू के

इन हालात में नियमित जब तक स्पष्ट नहीं हो जाता जुम्मः अदा नहीं किया जा सकता। इस लिए मैंने आज परामर्श के बाद यही फ़ैसला किया है कि दफ़्तर से ही ख़ुत्बा के स्थान पर एक पैग़ाम की शक्ल में आप से बात कर लूं और हो जाओं

घरों में अहबाब जमात को चाहिए कि जमाअत के साथ नमाज़ का प्रबन्ध करें और जुम्अः भी घर के लोग मिलकर पढ़ें और मल्फ़ूज़ात में से या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दूसरी किताबों में से या अलफ़ज़ल में से या अलहकम से कोई भी उद्धरण पढ़ कर ख़ुत्बा दिया जा सकता है

ऐम टी ए पर बड़े अच्छे प्रोग्राम आते हैं कुछ वक़्त उन प्रोग्रामों को भी इकट्ठे बैठ कर देखने कोशिश करें।

हुकूमत ने अवाम की बेहतरी के लिए आपकी सेहत को ठीक रखने के लिए जो हिदायतों दी हैं जो क़ानून बनाए हैं इस की भी पाबंदी करें।

दुआओं की तरफ़ बहुत ध्यान दें। दुआओं से अल्लाह तआला के फ़ज़ल को हम जज़ब कर सकते हैं और अपनी रुहानी और जिस्मानी हालत को सेहत मंद कर सकते हैं।

सबसे ज़्यादा ज़रूरी बात यही है कि ख़ुदा तआला से गुनाहों की माफ़ी चाहें दिल को साफ़ करें और नेक कामों में व्यस्त हो जाएं

दुआ करें कि अल्लाह तआला अपना फ़ज़ल फ़रमाए अल्लाह तआला इस महामारी से दुनिया को शीघ्र पाक करे और सब दुनिया को इन्सानियत के तक़ाज़े पूरे करने वाला बनाए और ख़ुदा तआला को पहचानने वाले हों।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दिनांक 27 मार्च 2020 ई को अपने दफ़्तर इस्लामाबाद टलफ़ोरड यू के से विश्व व्यापि जमाअत अहमदिया को एक विशेष पैग़ाम इरशाद फ़रमाया जो कि विभिन्न भाषाओं में अनुवाद के साथ एम टी ए इंटरनेशनल पर सीधा प्रसारित किया गया।

तशह्हुद, ताव्वुज़ और तसमिया के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आजकल जो महामारी फैली हुई है वाइरस की इस की वजह से हुकूमत ने पाबंदियां लगाई हैं दुनिया में बहुत सारी हुकूमतों ने और यहां बर्तानिया की हुकूमत ने भी कि मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज़ अदा नहीं हो सकती या अगर हो सकती है तो दो या कुछ लोगों से अधिक न हों और वे भी क़रीबी लोग हों। अभी क़ानून वाज़िह नहीं हो रहा। कोई व्याख्या कुछ करता है और कोई कुछ कि यह सिर्फ़ जैसा कि मैंने कहा कि क़रीबी रिश्तेदार हों तभी हो सकता है और कोई कह रहा है कि दोस्त या साथ रहने वाले हों तो भी शामिल हो सकते हैं। तो बहरहाल इन हालात में बाक़ायदा जब तक स्पष्ट नहीं हो जाता जुम्अः अदा नहीं किया जा सकता क्योंकि जुम्अः में भी कुछ बातें स्पष्ट होने वाली हैं। इस लिए मैंने आज परामर्श के बाद यही फ़ैसला किया है कि दफ़्तर से ही ख़ुत्बा के स्थान पर एक पैग़ाम की शक्ल में आपसे बात कर लूं और सम्बोधित हो जाऊं। जुम्अः बाक़ायदा न पढ़ा जाए। जुम्अः के दिन ऐम टी ए पर ख़ुत्बा सुनना समय के ख़लीफ़ा का ख़ुत्बा सुनना ऐसा है कि जिसकी अब लोगों को आदत पड़ चुकी है। अगर आज उस वक़्त में जमाअत से सम्बोधित न हुआ तो लोगों को कई बार मायूसी भी होती है और फिर उस के अतिरिक्त विभिन्न प्राकर की क़यास-आराइयाँ भी शुरू हो जाती हैं इस लिए मैंने यही बेहतर समझा कि किसी न किसी रंग में जमाअत से सम्बोधित हो जाऊं और इस के लिए यही तरीक़ा धारण किया गया कि दफ़्तर से बैठ कर एक पैग़ाम की सूरत में आपसे सम्बोधित हो जाऊं।

बहरहाल जैसा कि मैंने कहा आज जो जुम्अः है वे हम तो नहीं पढ़ेंगे और भविष्य के लिए इंशा अल्लाह क्या तरीका धारण करना है वह इंशा अल्लाह तआला बता दिया जाएगा। लंबा समय हम जुम्अः छोड़ भी नहीं सकते। मेरा जमाअत से जैसा कि मैंने कहा सम्पर्क भी ज़रूरी है और आजकल के हालात में खासतौर पर और भी अधिक ज़रूरी है इस लिए वकीलों और सम्बन्धित लोगों के साथ परामर्श के बाद इंशा अल्लाह उस का हम हल निकाल लेंगे।

जमाअत के सदस्यों को भी मैं यह कहूँगा कि जैसा कि जहां मस्जिद में आने पर हुकूमत ने इस बीमारी की वजह से पाबंदी लगाई है या पाबंदी तो नहीं लगाई यहां जैसे यू के में यह है कि अकेले तौर पर मस्जिद में आकर नमाज़ पढ़ सकते हैं या कुछ फ़ैमिली सदस्य भी आकर नमाज़ पढ़ सकते हैं लेकिन वहां यही है कि दूरी इतनी हो कि जो हुकूमत ने बताया कि आपस में क़रीबी सम्पर्क न हो लेकिन इस के बावजूद बाजमाअत नमाज़ इस तरह नहीं पढ़ी जा सकती सारे इकट्ठे हो कर आएं। तो इसी अवस्था में घरों में जमाअत के लोगों को चाहिए कि बाजमाअत नमाज़ का प्रबन्ध करें और जुम्अः भी घर के लोग मिलकर पढ़ें और मल्फ़ूज़ात में से या जमाअत किताबों में से या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दूसरी किताबों में से या अलफ़ज़ल में से या अलहकम से या किसी और रिसाले से कोई भी उद्धरण पढ़ कर ख़ुत्बा दिया जा सकता है और घर के लोगों में से कोई बालिग़ लड़का या मर्द जुम्अः भी पढ़ा सकता है और नमाज़ें भी पढ़ा सकता है। जुम्माओं को बहरहाल लंबा अरसा छोड़ा नहीं जा सकता। ख़ुत्बा के लिए जब घरों में लोग जुम्अः पढ़ाएँगे और इस की तैयारी करेंगे तो अध्ययन करेंगे इस से ज्ञान भी बढ़ेगा और यूं हुकूमत की पाबंदी की वजह से घर बैठना भी धार्मिक और रुहानी लाभ का कारण हो जाएगा इल्मी लाभ का कारण हो जाएगा बल्कि अलहकम ने आजकल जो लोगों की राय का सिलसिला शुरू किया है कि हम इस पाबंदी की वजह से घर बैठ कर किस तरह वक़्त गुज़ारते हैं इस में अक्सर लोग ये लिख रहे हैं कि जमाअत की, क़ुरआन और हदीस और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों और जमाअत का लिट्रेचर पढ़ कर हम अपने ज्ञान में इज़ाफ़ा कर रहे हैं और बहुत सी प्रतिक्रियाएं तो आजकल विभिन्न दुनियावी साईटस पर दुनियादार भी कर रहे हैं कि इस कारण से हमें भी अपनी घरेलू ज़िन्दगी को अपनी हालतों को बेहतर करने की तौफ़ीक़ मिल रही है और हमारी घरेलू ज़िन्दगी वापस आ गई है। अतः हमें भी अपनी घरेलू ज़िन्दगी को अपनी हालतों को सँवारते हुए और बच्चों की तर्बीयत करते हुए गुज़ारने की कोशिश करनी चाहिए। ऐम टी ए पर बड़े अच्छे प्रोग्राम आते हैं कुछ समय उन प्रोग्रामों को भी इकट्ठे बैठ कर देखने की कोशिश करें और इस के इलावा हुकूमत ने अवाम की बेहतरी के लिए जैसा कि पहले भी मैं कह चुका हूँ आपकी सेहत क़ायम रखने के लिए जो हिदायतें दी हैं जो क़ानून बनाए हैं इस की भी पूरी पाबंदी करें और सबसे बढ़कर जैसा कि मैंने पिछले ख़ुत्बों में कहा था कि दुआओं की तरफ़ बहुत ध्यान दें। दुआओं से अल्लाह तआला के फ़ज़ल को हम जज़ब कर सकते हैं और अपनी रुहानी और जिस्मानी हालत को सेहत मंद कर सकते हैं और यही हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बार-बार नसीहत फ़रमाई है और ऐसे हालात में भी यही नसीहत फ़रमाई है कि सबसे ज़्यादा ज़रूरी बात यही है कि ख़ुदा तआला से गुनाहों की माफ़ी चाहें दिल को साफ़ करें और नेक कामों में व्यस्त हो जाएं। अल्लाह तआला ने दुआ का एक बहुत बड़ा हथियार हमें दिया है इस के द्वारा अल्लाह तआला की पनाह में आने की हमें कोशिश करनी चाहिए और इस तरफ़ ध्यान देना चाहिए।

जहां तक जुम्अः न पढ़ने का सवाल है कुछ हालात में बाजमाअत नमाज़ और जुम्अः की कुछ हदीसों से भी वज़ाहत होती है कि ये छोड़े जा सकते हैं जैसे बुख़ारी की एक हदीस है कि हज़रत इब्न अब्बास रज़ि ने बारिश वाले दिन में अपने

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

जो व्यक्ति किसी शहीद को चलता हुआ देखने की इच्छा रखता हो वह तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि को देख ले।

नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से फज़्ज़ाज़ का लक़ब पाने वाले, अपनी ज़िन्दगी में जन्नत की ख़ुश-ख़बरी को पाने वाले, जंग उहद के मध्य आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त के लिए अपना हाथ नष्ट करवाने का सौभाग्य पाने वाले, مَنْ قَضٰى نَحْبَهٗ का वास्तविक रूप, हज़रत उमर रज़ि की तरफ़ से निर्धारित किए गए छः सदस्यीय शूरा कमेटी के सदस्य,

इख़लास तथा वफ़ा के पैकर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बदरी सहाबी हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ी अल्लाह अन्हो के उत्तम आचरण का वर्णन।

कोरोना वाइरस से फैलने वाली महामारी से ख़ुद भी बचने और दूसरों को बचाने के लिए सुरक्षात्मक कोशिशों को धारण करने, इसी तरह दुआओं की तरफ़ बहुत ध्यान देने की नसीहत।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 13 मार्च 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू. के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज जिन बदरी सहाबी का ज़िक्र होगा उनका नाम है हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि। हज़रत तलहा रज़ि का सम्बन्ध क़बीला बनू तै बिन मुर्रा से था। उनके पिता का नाम उबैदुल्लाह बिन उसमान और माता का नाम सअबा था जो अब्दुल्लाह बिन इमाद हज़रमी की बेटी और हज़रत अला बिन हज़रमी की बहन थीं। हज़रत तलहा रज़ि की कुनिय्यत अबू मुहम्मद थी। हज़रत अला बिन हज़रमी के पिता का नाम अब्दुल्लाह बिन इमादा हज़रमी था। हज़रत अला हज़रमोत से सम्बन्ध रखते थे और हर्ब बिन अमय के हलीफ़ थे। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको बहरीन का हाकिम निर्धारित फ़रमाया। यह देहान्त तक बहरीन के हाकिम रहे। उनकी वफ़ात 14 हिज्री में हज़रत उमर रज़ि के दौरे ख़िलाफ़त में हुई। उनका एक भाई आमिर बिन हज़रमी बदर के दिन कुफ़्र की हालत में मारा गया और दूसरा भाई अमरो बिन हज़रमी मुशरिकों में से पहला शख़्स था जिसको एक मुसलमान ने क़तल किया और इस का माल पहला था जो बतौर ख़ुमस के इस्लाम में आया

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 160 वमन बनी तैम बिन मुर तलहा बिन उबैदुल्लाह प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

(असदुल ग़ाबह भाग 4 पृष्ठ 71 अल्अला बिन अलहज़रमी दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2008 ई)

सातवीं पुश्त में हज़रत तलहा रज़ि की वंशावली मुर्रह बिन काब पर जा कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिल जाती है और चौथी पुश्त में हज़रत अबू बकर रज़ि के साथ। उनके पिता उबैदुल्लाह ने इस्लाम का ज़माना नहीं पाया लेकिन माता ने लम्बी ज़िन्दगी पाई और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान ला कर सहाबिया होने का सौभाग्य पाया। हिजरत से पहले यह इस्लाम ले आई थीं।

(उद्धरित रोशन सितारे लेखक ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ 128)

हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि जंग बदर में शामिल नहीं हुए मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें माले ग़नीमत में से हिस्सा दिया था। उनकी जंग बदर में सम्मिलित न होने का कारण यह वर्णन किया गया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ुरैश के क़ाफ़िला की सीरिया से रवानगी का अंदाज़ा फ़रमाया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी रवानगी से दस दिन पहले हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि और हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि को क़ाफ़िला की ख़बर लाने के लिए भेजा। दोनों रवाना हो कर हौरा पहुंचे तो वहां ठहरे रहे यहां तक कि क़ाफ़िला उनके पास से गुज़रा। हौरा बहीरे अह्मर पर स्थित एक पड़ाव है जहां से हिजाज़ और शाम के मध्य चलने वाले क़ाफ़िले गुज़रते थे। बहरहाल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत तलहा रज़ि और हज़रत सईद रज़ि के वापस आने से पहले ही यह ख़बर मालूम हो गई। आप ने अपने सहाबा को बुलाया और क़ुरैश के क़ाफ़िला के इरादा से रवाना हुए मगर क़ाफ़िला एक दूसरे रास्ते अर्थात तट के रास्ते से तेज़ी से निकल गया। इस का पहले भी एक जगह ज़िक्र हो चुका है। और क़ाफ़िला वाले तलाश करने वालों से बचने के लिए दिन रात चलते रहे। यह क़ाफ़िला काफ़िरों का, मक्का वालों का था। हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि और हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि मदीना के इरादे से रवाना हुए ताकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़ाफ़िला की ख़बर दें। इन दोनों को आप की जंग बदर के लिए रवानगी का इल्म नहीं था। वे मदीना उस दिन पहुंचे जिस दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदर में क़ुरैश के लश्कर से जंग की। वे दोनों रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर होने के लिए मदीना से रवाना हुए और आप की बदर से वापसी पर तुरबान में मिले। तुरबान भी मदीना से उन्नीस मील की दूरी पर एक वादी है जिसमें प्रचुरता से मीठे पानी के कुँएं हैं। जंग बदर के लिए जाते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यहां ठहराव फ़रमाया था। हज़रत तलहा रज़ि और हज़रत सईद रज़ि जंग में शामिल न हुए थे मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदर के माले ग़नीमत में से उनको हिस्सा प्रदान फ़रमाया जैसा कि पहले भी ज़िक्र हुआ है। अतः वे दोनों बदर में शामिल होने वाले ही क़रार गए।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 162 तलहा बिन उबैदुल्लाह क़ुरैशी दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

(अस्सीरतुन्नबविय्या फी ज़ौइल कुर्आन वस्सन भाग 2 पृष्ठ 123 प्रकाशन दारुल क़लम दमिशक़)

(फ़र्हंग सीरत लेखक सय्यद फ़ज़लुर्रहमान पृष्ठ 75 ज़व्वार अकैडमी पब्ली केशन्ज़् कराची 2003 ई)

हज़रत तलहा रज़ि जंग उहद और बाक़ी अन्य जन्गों में सम्मिलित हुए। सुलह हुदैबिया के अवसर पर भी मौजूद थे। ये उन दस लोगों में से हैं जिन को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी ज़िन्दगी में ही जन्नत की बिशारत दे दी थी। इन आठ लोगों में से थे जिन्होंने सबसे पहले इस्लाम स्वीकार किया और उन पाँच लोगों में से थे जिन्हों ने हज़रत अबू बकर रज़ि के द्वारा इस्लाम स्वीकार किया था। यह हज़रत उमर रज़ि की बनाई गई शूरा कमेटी के छ: मेम्बरों में से एक थे। यह वे लोग थे जिनसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वफ़ात के समय राज़ी थे

(अलइस्तिआब फी मअरफतिस्सहाबा सहाबा भाग 2 पृष्ठ 317 तलहा बिन उबैदुल्लाह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

(अल-असाब: भाग 3 पृष्ठ 430 तलहा बिन उबैदुल्लाह प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1995 ई)

यज़ीद बिन रोमान रज़ि रिवायत करते हैं कि एक बार हज़रत उसमान रज़ि और हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि दोनों हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि के पीछे निकले और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन दोनों के सामने इस्लाम का पैग़ाम पेश किया और इन दोनों को क़ुरआन पढ़ कर सुनाया और उन्हें इस्लाम के हुक़ूक़ के बारे में आगाह किया और इन दोनों से अल्लाह तआला की तरफ़ से मिलने वाले शरफ़ का वादा किया। इस पर आप दोनों अर्थात हज़रत उसमान रज़ि और हज़रत तलहा रज़ि ईमान ले आए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तसदीक़ की। फिर हज़रत उसमान रज़ि ने निवेदन किया हे अल्लाह के रसूल! मैं हाल ही में शाम देश से वापस आया हूँ जब वापसी पर मआन, यह भी एक स्थान का नाम है जो मौता से पहले स्थित है। जंग मौता के अवसर पर इस जगह पहुंच कर मुस्लमानों को मालूम हुआ कि रोमियों का दो लाख का लश्कर मुस्लमानों के लिए तैयार है तो सहाबा रज़ि यहां दो दिन ठहरे रहे। बहरहाल यह कहते हैं कि मैं जब वापसी पर मआन और ज़रक़ाए, यह भी मआन स्थान के निकट स्थित है, के मध्य पहुंचा और हमारा वहां पड़ाव था। हम सोए हुए थे कि एक घोषणा करने वाले ने यह ऐलान किया कि हे सोने वालो!जागो कि अहमद मक्का में प्रकट हो चुका है। फिर हम वहां से वापस पहुंचे तो आप के बारे में सुना।"

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद, भाग 3 पृष्ठ 40 उसमान बिन अफ्फान, प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2012 ई)

(फ़र्हंग सीरत लेखक सय्यद फ़ज़लुर्रहमान पृष्ठ 279 ज़व्वार अकैडमी पब्ली केशन्ज़ कराची 2003 ई)

(मुअज्जम बुलदान भाग 3 पृष्ठ 173 अज़ज़रका अलमकतबा अल्असरिया बेरूत 2014 ई)

हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि वर्णन करते हैं कि मैं बसरा (जो शाम देश का एक महान शहर है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने चाचा के साथ व्यापारिक सफ़र के दौरान इस शहर में क़ियाम फ़र्मा हुए थे तो कहते हैं कि मैं बसरा के बाज़ार में मौजूद था कि एक राहिब अपने सौमअ: अर्थात यहूदियों के इबादत करने के स्थान में यह कह रहा था कि क़ाफ़िले वालों से पूछो कि उनमें कोई शख़्स हर्म वालों में से भी है? मैंने कहा हाँ मैं हूँ। उसने पूछा क्या अहमद प्रकट हो गया है? तो हज़रत तलहा रज़ि ने कहा कि कौन अहमद? उसने कहा अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुतलिब का बेटा। यही वह महीना है जिसमें वह ज़ाहिर होगा और वह आख़िरी नबी होगा। उनके ज़ाहिर होने की जगह हर्म है और उनकी हिजरत गाह खजूर के बाग़ और पथरीली और शौरा और कल्लर वाली ज़मीन की तरफ़ होगी। तुम उन्हें छोड़ न देना। हज़रत तलहा रज़ि कहते हैं कि उसने जो कुछ कहा वह मेरे दिल में बैठ गया। मैं तेज़ी के साथ रवाना हुआ और मक्का आ गया। पूछा क्या कोई नई बात हुई है। लोगों ने कहा हाँ मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अमीन, मक्का वाले आप को अमीन कहा करते थे, अमीन ने नबुव्वत का दावा किया है और इब्न अबी क़हाफ़ा, हज़रत अबू बकर रज़ि की कुनिय्यत थी उन्होंने उनकी पैरवी की है। कहते हैं मैं रवाना हुआ और हज़रत अबू बकर रज़ि के पास आया और पूछा कि क्या तुम ने इन साहिब की पैरवी की है? उन्होंने कहा हाँ। तुम भी उनके पास चलो और उनकी पैरवी करो क्योंकि वह हक़ की तरफ़ बुलाते हैं। हज़रत तलहा रज़ि ने हज़रत अबू बकर रज़ि को राहिब की बातचीत वर्णन की। हज़रत अबू बकर रज़ि हज़रत तलहा रज़ि को साथ लेकर निकले और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास उनको हाज़िर किया। हज़रत तलहा रज़ि ने इस्लाम स्वीकार किया और जो कुछ राहिब ने कहा था उस की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़बर दी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस से ख़ुश हुए।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 161 तलहा बिन उबैदुल्लाह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

तारीख़ की एक पुस्तक तबक़ातुल कुबरा में इस का वर्णन है। जब हज़रत तलहा रज़ि इस्लाम लाए तो नौफ़ल बिन ख़ौलीद बिन अदविय्या ने उन्हें और हज़रत अबू बकर रज़ि को एक रस्सी से बांध दिया। इसलिए उन्हें और हज़रत अबू बकर रज़ि को करीयनैन दो साथी भी कहते थे। नौफ़ल क़ुरैश में अपनी सख़्ती की वजह से मशहूर था। उनको बाँधने वालों में उनका भाई अर्थात हज़रत तलहा रज़ि का भाई उस्मान बिन उबैदुल्लाह भी था। बाँधा इसलिए था कि यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर न हो सकें और इस्लाम से रुक जाएं। इमाम बहीक़ी ने लिखा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआ फ़रमाई कि हे अल्लाह! अदविय्या की बुराई से उन्हें बचा।

(उद्धरित रोशन सितारे लेखक ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ 129-130)

हज़रत मसऊद बिन ख़राश रज़ि से रिवायत है कि एक दिन मैं सफ़ा और मर्वा के मध्य चक्कर लगा रहा था कि मैंने देखा कि बहुत सारे लोग एक नौजवान का पीछा कर रहे हैं जिसका हाथ गर्दन से बंधा हुआ था मैंने पूछा यह कौन है। लोगों ने जवाब दिया कि तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि धर्म से विमुख से हो गया है और उनकी माता उनके पीछे पीछे ग़ुस्से में उनको गालियां दिए जा रही थी

(अत्तातारीख़ अल्सग़ीर ले इमाम बुख़ारी भाग 1 पृष्ठ 113 दारुल मआरफा बेरूत)

अब्दुल्लाह बिन सअद ने अपने पिता से रिवायत की कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना की तरफ़ हिजरत करते हुए ख़र्रार, यह भी एक वादी है जो हिजाज़ के निकट स्थित है और यह भी कहा जाता है कि मदीना की वादियों में से एक वादी है। बहरहाल जब यह ख़र्रार स्थान से रवाना हुए तो सुबह के समय हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि मिले जो शाम से क़ाफ़िला के साथ आए थे। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ि को शाम के कपड़े पहनाए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सूचना दी कि मदीना वाले बहुत देर से प्रतीक्षा कर रहे हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने चलने में तेज़ी फ़रमाई और हज़रत तलहा रज़ि मक्का चले गए। जब वह अपने काम से फ़ारिग़ हुए तो हज़रत अबू बकर रज़ि के घर वालों को अपने साथ लेकर मदीना पहुंच गए

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 161 तलहा बिन उबैदुल्लाह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

(मुजमुल बुलदान भाग 2 पृष्ठ 400 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

हज़रत तलहा रज़ि और हज़रत ज़ुबैर रज़ि ने मक्का में जब इस्लाम स्वीकार किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हिजरत से पहले इन दोनों के मध्य भाईचारा स्थापित फ़रमाया और जब मुस्लमान हिजरत कर के मदीना पहुंचे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत तलहा रज़ि और हज़रत अबू अय्यूब अनसारी रज़ि के मध्य भाईचारा स्थापित फ़रमाया।

एक दूसरे कथन के अनुसार एक रिवायत यह भी है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत तलहा रज़ि और हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि के मध्य भाईचारा स्थापित फरमाया और एक तीसरी रिवायत यह है कि हज़रत तलहा रज़ि और हज़रत उबई बिन कअब रज़ि के मध्य भाईचारा स्थापित फ़रमाया। जब हज़रत तलहा रज़ि ने मदीना हिजरत की तो वह हज़रत असअद बिन ज़ुरारह रज़ि के मकान में ठहरे।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 85 तलहा बिन उबैदुल्लाह दारुल कुतुब अल्इलमिया 2003 ई)

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 162 तलहा बिन उबैदुल्लाह क़ुरैशी दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत तलहा रज़ि की कुछ माली क़ुर्बानीयों के कारण आँहज़रत सल्लल्लाहो

अलैहि वसल्लम ने उन्हें फ़य्याज़ क़रार दिया था। बहुत फ़य्याज़ हैं। अत: जंग ज़ी क़िरद के अवसर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का गुज़र एक चश्मे पर से हुआ तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस के बारे में पूछा तो आप को बताया गया कि इस कुँवें का नाम बनसानह है और यह नमकीन है। आप ने फ़रमाया नहीं इस का नाम नुअमान है और यह मीठा और पाक है। हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि ने इस को ख़रीदा और वक़्फ़ कर दिया। इस का पानी मीठा हो गया। जब हज़रत तलहा रज़ि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और यह घटना बताई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको फ़रमाया तलहा तुम तो बड़े फ़य्याज़ हो। अत: उनको "तलहा फ़य्याज़" के नाम से पुकारा जाने लगा

मूसा बिन तलहा अपने पिता तलहा रज़ि से रिवायत वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उहद के दिन हज़रत तलहा का नाम तलहतुल ख़ैर रखा। जंग तबूक और जंग ज़ी क़िरद के अवसर पर तलहतुल फ़य्याज़ रखा और जंग हुनैन के दिन तलहतुल जौद रखा। इस का अर्थ भी फ़य्याज़ी है, दानशीलती है

(अस्सीरतुल हलबिया भाग 3 पृष्ठ 478 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत2002ई)

(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 85 तलहा बिन उबैदुल्लाह क़ुरैशी दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

साइब बिन यज़ीद से रिवायत है कि मैं सफ़र तथा निवास में हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि के साथ रहा मगर मुझे आम तौर पर रुपए और कपड़े और खाने पर तलहा रज़ि से ज़्यादा सख़ी कोई नहीं नज़र आया।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 167 तलहा बिन उबैदुल्लाह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उहद के दिन अपने सहाबा की एक जमाअत से मौत पर बैअत ली। जब बज़ाहिर मुस्लमानों की हार हुई थी तो वह दृढ़ता पूर्वक रहे और वह अपनी जान पर खेल कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रक्षा करने लगे यहां तक कि उनमें से कुछ शहीद हो गए। बैअत करने वाले लोगों में हज़रत अबू बकर रज़ि, हज़रत उमर रज़ि , हज़रत तलहा रज़ि, हज़रत सअद, हज़रत सहल बिन हुनीफ़ रज़ि और हज़रत अबू दुजानह रज़ि शामिल थे

(अलअसाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 431 तलहा बिन उबैदुल्लाह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2005 ई)

हज़रत तलहा रज़ि उहद के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सम्मिलित हुए। वो उन लोगों में से थे जो इस रोज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराह साबित-क़दम रहे और आप से मौत पर बैअत की। मालिक बिन ज़हैर ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तीर मारा तो हज़रत तलहा रज़ि ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरे को अपने हाथ से बचाया। तीर उनकी छोटी उंगली में लगा जिससे वह बेकार हो गई। जिस वक़्त उन्हें तीर लगा, जो पहला तीर लगा तो तकलीफ़ से उनकी 'सी की आवाज़ निकली। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर वह बिस्मिल्लाह कहते तो इस तरह जन्नत में दाख़िल होते कि लोग उन्हें देख रहे होते। बहरहाल इस दनि, तारीख़ की एक किताब में आगे लिखा है कि जंग उहद के इस दिन हज़रत तलहा रज़ि के सिर में एक मुशरिक ने दो बार चोट पहुंचाई। एक बार जबकि वह उस की तरफ़ आ रहे थे। दूसरी बार जबकि वह इस से चेहरा फेर रहे थे। इस से बहुत ख़ून बहा।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 162-163 तलहा बिन उबैदुल्लाह क़ुरैशी दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

इसी घटना का अधिक विस्तार सीरतुल हलबिया में एक रिवायत में इस तरह भी है कि क़ैस बिन अब्बू हाज़िम कहते हैं कि मैंने उहद के दिन हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि के हाथ का हाल देखा जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तीरों से बचाते हुए शल हो गया था। एक कथन है कि इस में भाला लगा था और इस से इतना ख़ून बहा कि कमज़ोरी से बेहोश हो गए। हज़रत अबू बकर रज़ि ने उन पर पानी के छींटे डाले यहां तक कि उनको होश आया। होश आने पर उन्होंने शीघ्र पूछा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? हज़रत अबू बकर रज़ि ने उनसे कहा वह ख़ैरीयत से हैं और उन्होंने ही मुझे आप की तरफ़ भेजा है। हज़रत तलहा रज़ि ने कहा اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ کُلُّ مُصِیْبَۃٍ بَعْدَہٗ جَلَلٌ कि सब तारीफ़ें अल्लाह तआला ही की हैं। हर मुसीबत आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद छोटी है।

(अस्सीरतुल हलबिया भाग 2 पृष्ठ 324 जंग उहद दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

इसी जंग की घटना की एक रिवायत एक तारीख़ में इस तरह मिलती है कि हज़रत ज़ुबैर रज़ि वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उहद के दिन दो ज़िरहें पहने हुए थे। आप ने चट्टान पर चढ़ना चाहा मगर ज़िरहों के वज़न की वजह से और सिर और चेहरे पर चोट से ख़ून बहने की वजह से, (आप ज़ख़्मी हुए थे उस के बाद का यह है) आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कमज़ोरी हो गई थी तो चट्टान पर चढ़ न सके। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत तलहा रज़ि को नीचे बिठाया और उनके ऊपर पैर रखकर चट्टान पर चढ़े। हज़रत ज़ुबैर रज़ि कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह कहते हुए सुना कि तलहा रज़ि ने अपने ऊपर जन्नत वाजिब कर ली।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 85 तलहा बिन उबैदुल्लाह क़ुरैशी दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

(अस्सीरतुल हलबिया भाग 2 पृष्ठ 321 जंग उहद दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

फिर एक रिवायत में इस तरह है कि हज़रत तलहा रज़ि की एक टांग में लंगड़ाहट थी जिसकी वजह से वह सही चाल के साथ चल नहीं सकते थे। जब उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उठाया तो वह बहुत कोशिश कर के अपनी चाल और अपने क़दम ठीक रख रहे थे ताकि लंगड़ाहट की वजह से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ न हो। इस के बाद हमेशा के लिए उनकी लंगड़ाहट दूर हो गई।

(अस्सीरतुल हलबिया भाग 2 पृष्ठ 322 जंग उहद दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

आयशा और उम्मे इसहाक़ जो हज़रत तलहा रज़ि की बेटियां थीं, इन दोनों ने वर्णन किया कि उहद के दिन हमारे पिता को चौबीस ज़ख़्म लगे जिनमें से एक चौकोर ज़ख़्म सिर में था और पांव की रग कट गई थी। उंगली शल हो गई थी और बाक़ी ज़ख़्म जिस्म पर थे। इन पर बेहोशी का ग़लबा था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने के दो दाँत टूट गए थे आप का चेहरा भी ज़ख़्मी था। आप पर भी बेहोशी का ग़लबा था। हज़रत तलहा रज़ि आप को उठा कर, अपनी पीठ पर इस तरह उल्टे क़दमों पीछे हटे कि जब कभी मुशरिकीन में से कोई मिलता तो वह इस से लड़ते यहां तक कि आप को घाटी में ले गए और सहारे से बिठा दिया। यह तबक़ातुल कुबरा का उद्धरण है।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 163 तलहा बिन उबैदुल्लाह क़ुरैशी प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

जंग उहद के दिन जब ख़ालिद बिन वलीद ने मुस्लमानों पर अचानक हमला

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

किया और मुस्लमानों में बिघराव फैल गया तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह ताला अन्हो ने इस का नक़्शा खींचते हुए जो विस्तार विभिन्न रिवायतों से ले के वर्णन फ़रमाया है, वह जो पिछली घटनाएं गुज़र चुकी हैं उनकी और अधिक विस्तार है। वह हज़रत तलहा रज़ि की साबित क़दमी और क़ुर्बानी के स्तर का एक अजीब नज़ारा पेश करती है। पहले भी इसी से जो देख चुके हैं, सुन चुके हैं इसी से यह स्तर नज़र आ रहा है लेकिन बहरहाल उस का विस्तार कुछ और इस तरह है जो आप ने वर्णन फ़रमाया।

'' कुछ सहाब रज़ि दौड़ कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चारों तरफ जमा हो गए जिनकी संख्या ज़्यादा से ज़्यादा तीस थी। कुफ़्फ़ार ने शिद्दत के साथ इस स्थान पर हमला किया जहां रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े थे। एक के बाद दूसरे सहाब रज़ि आपकी हिफ़ाज़त करते हुए मारे जाने लगे। तलवार चलाने वालों के के तीर-अंदाज़ ऊंचे टीलों पर खड़े हो कर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ बे-तहाशा तीर मारते थे।" यह देखते हुए कि दुश्मन उस वक़्त बे-तहाशा तीर मारते थे। "इस समय तलहा रज़ि ने जो क़ुरैश में से थे और मक्का के मुहाजरीन में शामिल थे, यह देखते हुए कि दुश्मन सब के सब तीर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुँह की तरफ़ फेंक रहा है अपना हाथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुँह के आगे खड़ा कर दिया। तीर के बाद तीर जो निशाना पर गिरता था वह तलहा रज़ि के हाथ पर गिरता था मगर जाँबाज़ और वफ़ादार सहाबी रज़ि अपने हाथ को कोई हरकत नहीं देता था। इस तरह तीर पड़ते गए और तलहा रज़ि का हाथ ज़ख़्मों की प्रचुरता की वजह से बिलकुल बेकार हो गया और सिर्फ एक ही हाथ उनका बाक़ी रह गया। सालों बाद इस्लाम की चौथी ख़िलाफ़त के ज़माना में जब मुस्लमानों में आपस में जंग हुई तो किसी दुश्मन ने ताना के तौर पर तलहा रज़ि को कहा टुंडा। इस पर एक दूसरे सहाबी रज़ि ने कहा हाँ टुंडा ही है मगर कैसा मुबारक टुंडा है। तुम्हें मालूम है तलहा रज़ि का यह हाथ रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुँह की सुरक्षा में टुंडा हुआ था। उहद की जंग के बाद किसी शख़्स ने तलहा रज़ि से पूछा कि जब तीर आप के हाथ पर गिरते थे तो क्या आप को दर्द नहीं होती थी और क्या आप के मुँह से उफ़ नहीं निकलती थी? तलहा रज़ि ने जवाब दिया। दर्द भी होता था और उफ़ भी निकलना चाहती थी लेकिन मैं उफ़ करता नहीं था ताकि ऐसा न हो कि उफ़ करते वक़्त मेरा हाथ हिल जाए और तीर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुँह पर गिरे।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन , अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 250)

जंग हमरुल असद के अवसर पर पीछा करते समय रवाना होते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि मिले। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया तलहा तुम्हारे हथियार कहाँ हैं? हज़रत तलहा रज़ि ने निवेदन किया कि क़रीब ही हैं। यह कह कर वह शीघ्रता से गए और अपने हथियार उठा लाए हालाँकि उस समय तलहा रज़ि के सिर्फ सीने पर ही उहद की जंग के नौ ज़ख़्म थे। उनके जिस्म पर कुल मिला कर सत्तर से ऊपर ज़ख़्म थे। हज़रत तलहा रज़ि बयान करते हैं कि मैं अपने ज़ख़्मों की निसबत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़ख़्मों के बारे में ज़्यादा चिन्तित था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे पास तशरीफ़ लाए और पूछने लगे कि तुमने दुश्मन को कहाँ देखा था? मैंने निवेदन किया कि निचले इलाक़े में। आप ने फ़रमाया यही मेरा भी ख़्याल था जहां तक उनका अर्थात क़ुरैश का सम्बन्ध है तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उनको हमारे साथ भविष्य में कभी इस तरह का मामला करने का अवसर नहीं मिल सकता। यहां तक कि अल्लाह ताला मक्का को हमारे हाथों से फ़तह कर देगा।

(अस्सीरतुल हलबिया भाग 2 पृष्ठ 350-351 जंग उहद दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

जंग तबूक के अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़बर मिली कि कुछ मुनाफ़िक़ीन सोवियलम यहूदी के घर जमा हो रहे हैं और इस का घर जासूम स्थान के निकट था। जासूम को बेअरे जासूम भी कहते हैं। यह शाम की तरफ में रातिज के करीब में अबू हशीम बिन तैयहान का कुँआं था और इस का पानी बहुत अच्छा था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस का पानी पिया था। बहरहाल वह उस के घर जमा हो रहे थे और वह मुनाफ़िक़ उन लोगों को जंग तबूक में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जाने से रोक रहा था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत तलहा रज़ि को कुछ सहाबा के साथ इस की तरफ़ रवाना किया और आदेश दिया कि सोवियलम के घर को आग लगा दी जाए। हज़रत तलहा रज़ि ने ऐसा ही किया। ज़हहाक बिन ख़लीफ़ा घर के पीछे से भागने लगा। इस दौरान उस की टांग टूट गई और इस के बाक़ी लोग फ़रार हो गए।

(अस्सीरतुन्नबविय्या ले इब्ने हश्शाम भाग 2 पृष्ठ 517 जंग तबूक तहरीक़ बैयत सुवैलम शिर्कत मकतब तथा मतबा मुस्तफ़ा अलबाली मिस्र 1955 ई)

(फ़र्हंग सीरत लेखक सय्यद फ़ज़लुर्रहमान पृष्ठ 84 ज़व्वार अकैडमी पब्ली केशन्ज़् कराची 2003 ई)

हज़रत अली रज़ि बयान करते हैं कि मेरे दोनों कानों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह कहते हुए सुना है कि तलहा रज़ि और ज़ुबैर रज़ि जन्नत में मेरे दो पड़ोसी होंगे।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 86 तलहा बिन उबैदुल्लाह क़ुरैशी दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

जंग तबूक में पीछे रहने वालों में से एक हज़रत कअब बिन मालिक रज़ि भी थे। उनका बाईकॉट हुआ। चालीस दनि के बाद जब अल्लाह तआला ने उनकी तौबा स्वीकार फ़रमाई और माफ़ी का ऐलान हुआ और यह मस्जिद में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए तो हज़रत तलहा रज़ि ने आगे बढ़कर हज़रत कअब रज़ि से हाथ मिलाया । उनको मुबारकबाद दी। सिवाए हज़रत तलहा रज़ि के मज्लिस से कोई न उठा था। हज़रत कअब रज़ि कहते हैं कि मैं हज़रत तलहा रज़ि का यह एहसान कभी भूल नहीं सकता।

(उद्धरित रोशन सितारे लेखक ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ 145)

हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि वर्णन करते हैं कि मैं नौ लोगों के बारे में इस बात की गवाही देता हूँ कि वे जन्नती हैं और अगर मैं दसवीं के बारे में भी यही गवाही दूं तो गुनाहगार नहीं हूँगा। कहा गया यह कैसे मुम्किन है तो उन्होंने कहा कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हिरा पहाड़ पर थे तो वह हिलने लगा। इस पर आप ने फ़रमाया कि ठहरा रह हे हिरा अवश्य तुझ पर एक नबी या सिद्दीक़ या शहीद के इलावा कोई और नहीं। निवेदन किया गया कि वे कौन लोग हैं? तो हज़रत सईद रज़ि ने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, अबू बकर रज़ि, उमर रज़ि, उसमान रज़ि, अली रज़ि, तलहा रज़ि, ज़ुबैर रज़ि, साद रज़ि और अब्दुर रहमान बिन औफ़ रज़ि हैं। ये नौ लोग थे। पूछा गया दसवें कौन हैं? तो उन्होंने थोड़ी देर ठहरे और फिर हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि ने कहा कि वह मैं हूँ।

(सुनन अत्तिर्मज़ी अबवाबुल मनाकिब सईद बिन ज़ैद हदीस 3757)

हज़रत सईद बिन ज़ुबैर रज़ि वर्णन करते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ि, हज़रत उमर रज़ि, हज़रत उसमान, हज़रत अली रज़ि, हज़रत तलहा रज़ि, हज़रत ज़ुबैर रज़ि, हज़रत साद रज़ि, हज़रत अब्दुल रहमान रज़ि और हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि का स्थान ऐसा था कि मैदान जंग में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

के आगे आगे लड़ते थे और नमाज़ में आप के पीछे खड़े होते थे।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 478 सईद बिन ज़ैद दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है वह वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी शहीद को चलता हुआ देखने की इच्छा रखता हो वह तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि को देख ले।

हज़रत मूसा बिन तलहा रज़ि और हज़रत ईसा बिन तलहा रज़ि अपने पिता हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा कहते थे कि एक देहाती हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में यह पूछता हुआ हाज़िर हुआ कि مَنْ قَضٰى نَحْبَهٗ अर्थात वह जिसने अपनी मिन्नत को पूरा कर दिया, से कौन अभिप्राय है? देहाती ने जब आप से पूछा तो आप ने कुछ जवाब न दिया। फिर उसने पूछा तो आप ने जवाब नहीं दिया। फिर उसने पूछा मगर फिर भी ,तीसरी बार भी आप ने जवाब नहीं दिया। फिर वह अर्थात हज़रत तलहा रज़ि कहते हैं कि फिर मैं मस्जिद के दरवाज़े से सामने आया। मैंने उस वक़्त हरा लिबास पहना हुआ था। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे ,हज़रत तलहा रज़ि को देखा तो फ़रमाया कि वह पूछने वाला कहाँ है जो पूछता था कि مَنْ قَضٰى نَحْبَهٗ से कौन अभिप्राय है? देहाती ने कहा हे अल्लाह के रसील! मैं हाज़िर हूँ। हज़रत तलहा रज़ि कहते हैं आप ने मेरी तरफ़ इशारा किया और फ़रमाया देखो यह مَنْ قَضٰى نَحْبَهٗ मिका मिस्दाक़ है

(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 86 तलहा बिन उबैदुल्लाह क़ुरैशी दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

अबदुर्र रहमान बिन उसमान कहते हैं कि एक बार हम हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ी अल्लाह ताला अन्हो के साथ थे। हम लोगों ने एहराम बांध रखा था। कोई आदमी हमारे पास एक परिंदा बतौर तोहफा के लाया। हज़रत तलहा रज़ी अल्लाह अन्हो उस वक़्त सो रहे थे। हम में से कुछ लोगों ने उसे खा लिया और कुछ लोगों ने परहेज़ किया। जब हज़रत तलहा रज़ी अल्लाह ताला अन्हो बेदार हुए तो उन्होंने उन लोगों से समानता धारण की जिन्होंने उसे खा लिया था और फ़रमाया कि हम ने भी एहराम की हालत में दूसरे का शिकार नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मौजूदगी में खा लिया था।

(मस्नद अहमद बिन हंबल भाग 3 पृष्ठ 7 मस्नद अबू मुहम्मद तलहा बिन उबैदुल्लाह हदीस 1383 मुअस्स अर्ररिसाला 2001 ई)

हज़रत उमर रज़ि के आज़ाद किए गए ग़ुलाम असलम से रिवायत है कि हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि के जिस्म पर दो कपड़े देखे जो लाल मिट्टी में रंगे हुए थे हालाँकि वह एहराम में थे। उन्होंने पूछा कि हे तलहा इन दोनों कपड़ों का क्या हाल है अर्थात ये रंगे क्यों हुए हैं? उन्होंने कहा अमीरुल मोमनीन मैंने तो उन्हें मिट्टी में रंगा है। हज़रत उमर रज़ि ने कहा हे सहाबा की जमाअत तुम इमाम हो। लोग तुम्हारा अनुकरण करेंगे। अगर कोई जाहिल तुम्हारे जिस्म पर ये दोनों कपड़े देखेगा तो कहेगा कि तलहा रज़ि रंगीन कपड़े पहनते हैं हालाँकि वह एहराम की हालत में हैं। एतराज़ करेगा कि सफ़ैद की बजाय रंगीन कपड़े पहने हुए हैं चाहे जिस चीज़ मर्ज़ी में भी तुम ने रंगा है। एक दूसरी रिवायत में इन शब्दों की वृद्धि है कि हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया एहराम बाँधने वाले के लिए सबसे अच्छा लिबास सफ़ेद है। इसलिए लोगों को शंका में न डालो।

हज़रत हसन रज़ि से रिवायत है कि हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि ने अपनी एक ज़मीन हज़रत उसमान बिन अफ्फान रज़ि को सात लाख दिरहम में बेची। हज़रत उसमान रज़ि ने ये रक़म अदा कर दी। जब हज़रत तलहा रज़ि ये रक़म अपने घर ले आए तो उन्होंने कहा कि अगर किसी शख़्स के पास रात भर इतनी रक़म पड़ी रहे तो क्या मालूम उस शख़्स के बारे में रात को अल्लाह तआला की तरफ़ से क्या हुक्म नाज़िल हो जाए। ज़िन्दगी मौत का कुछ पता नहीं। अत: हज़रत तलहा रज़ि ने वह रात इस तरह व्यतीत की कि उनके क़ासिद इस माल को लेकर योग्य लोगों को देने के लिए मदीना की गलियों में फिरते रहे यहां तक कि जब सुबह हो गई तो इस रक़म में से उनके पास एक दिरहम भी न बचा।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 164-165 तलहा बिन उबैदुल्लाह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

इबन जरीर रिवायत करते हैं कि हज़रत तलहा रज़ि हज़रत उसमान रज़ि से इस समय मिले जब कि आप मस्जिद से बाहर निकल रहे थे। हज़रत तलहा रज़ि ने कहा कि आप के पच्चास हज़ार दिरहम मेरे पास थे वे मैंने हासिल कर लिए हैं। आप उन्हें वसूल करने के लिए किसी शख़्स को मेरी तरफ़ भेज दें। अर्थात किसी वक़्त लिए थे अब प्रबन्ध हो गया अब वे वसूल कर लें। इस पर हज़रत उसमान रज़ि ने उनसे फ़रमाया कि आप की मुरव्वत की वजह से वे हम ने आप को तोहफा कर दिए हैं।

(अलबिदाया वन्नहाया ले इब्ने असीर भाग 4 भाग 7 पृष्ठ 208 सन् 35 हिज्री, फ़सल फ़ी ज़िक्र शैय मन ख़ुतबा... दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001 ई)

हज़रत तलहा रज़ि की शहादत जंग जमल में हुई थी। इस बारे में रिवायत है। क़ैस बिन अब्बू हाज़िम से रिवायत है कि मरवान बिन हक्म ने जंग जमल के दिन हज़रत तलहा रज़ि के घुटने में तीर मारा तो रग में से ख़ून बहने लगा। जब उसे हाथ से पकड़ते थे तो ख़ून रुक जाता और जब छोड़ देते तो बहने लगता। हज़रत तलहा रज़ि ने कहा अल्लाह की क़सम अब तक हमारे पास उन लोगों के तीर नहीं आए। फिर कहा ज़ख़्म को छोड़ दो क्योंकि यह तीर अल्लाह ने भेजा है

हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि जंग जमल के दिन 10 जमादिस्सानी 36 हिज्री में शहीद किए गए थे। शहादत के वक़्त उनकी उम्र 64 साल थी। एक रिवायत के अनुसार 62 साल उम्र थी

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 167-168 तलहा बिन उबैदुल्लाह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

सईद बिन मुसय्यब से रिवायत है कि एक आदमी हज़रत अली रज़ि और हज़रत तलहा रज़ि और हज़रत ज़ुबैर रज़ि की बुराई वर्णन कर रहा था। हज़रत साद बिन मालिक रज़ि अर्तात हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि ने उसे मना किया और फ़रमाया कि मेरे भाईयों को बुरा-भला ना कहो। वह न माना। हज़रत साद रज़ि उठे और उन्होंने दो रकात नमाज़ पढ़ी। बाद उस के दुआ मांगी कि हे अल्लाह अगर ये बातें जो ये कह रहा है तेरी नाराज़गी का कारण हैं तो इस पर मेरी आँखों के सामने कोई बला नाज़िल फ़र्मा दे और इस को लोगों के लिए नसीहत का कारण बना दे। अत: वह शख़्स निकला तो इस का सामना एक ऐसे ऊंट से हुआ जो लोगों को चीरता हुआ आ रहा था। इस ऊंट ने इस शख़्स को एक पथरीले मैदान में जा पकड़ा और इस शख़्स को अपने सीने और ज़मीन के मध्य रखा और उसे पीस कर मार डाला। रावी कहता है कि मैंने देखा कि लोग हज़रत सअद रज़ि के पीछे यह कहते हुए जा रहे थे कि हे इसहाक़! आप को मुबारक हो। आप की दुआ क़बूल हो गई।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 88 तलहा बिन उबैदुल्लाह क़ुरैशी दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

अली बिन ज़ैद अपने पिता से रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ने हज़रत तलहा रज़ि को ख़्वाब में देखा जो फ़रमाते हैं कि मेरी क़ब्र दूसरी जगह हटा दो। मुझे पानी बहुत तकलीफ़ देता है। इसी तरह फिर दोबारा उन्हें ख़्वाब में देखा। अत: निरन्तर तीन बार देखा तो वह शख़्स हज़रत इब्न अब्बास रज़ि के पास आया और उनसे

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

अपनी ख़्वाब वर्णन की। लोगों ने जा कर उन्हें देखा तो उनका वह हिस्सा जो ज़मीन से मिला हुआ था पानी के गीला होने के कारण से हरा हो गया था। अत: लोगों ने हज़रत तलहा रज़ि को उस क़ब्र से निकाल कर दूसरी जगह दफ़न कर दिया। रावी कहते थे कि मानो मैं अब भी इस काफ़ूर को देख रहा हूँ जो उनकी दोनों आँखों में लगा हुआ था। इस में बिलकुल परिवर्तन न आया था। सिर्फ उनके बालों में कुछ अन्तर आ गया था कि वह अपनी जगह से हट गए थे। लोगों ने हज़रत अबू बकह रज़ि के घर में से एक घर दस हज़ार दिरहम पर ख़रीदा और इस में हज़रत तलहा रज़ि को दफ़न कर दिया।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 88 तलहा बिन उबैदुल्लाह क़ुरैशी दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि को इराक़ की ज़मीनों से चार और पाँच लाख दीनार के बराबर का अनाज होता था। और इलाक़ा सरअ जो जज़ीरा नुमा अरब के पश्चमी तरफ़ उत्तर से दक्षिण तक फैला हुआ पहाड़ी सिलसिला है इस को जबलुस्सरा भी कहते हैं वहां से कम से कम दस हज़ार दीनार के बराबर का अनाज होता था। उनकी अन्य ज़मीनों से भी अनाज हासिल होता था। बनू तीम का कोई ग़रीब ऐसा न था कि उन्होंने उस की और इस के घर वोलों की ज़रूरत को पूरा न न किया हो। उनकी बेवाओं का निकाह न कराया हो। उनके मजबूरों को सेवक न दिया हो अर्थात ख़िदमत करने के लिए तंग दस्तों की भी मदद की। और उनके मक़रूज़ों का क़र्ज़ न अदा क्या हो, सब के क़र्ज़ भी अदा किया करते थे। इसी तरह हर साल जब उन्हें अनाज से आय होती तो हज़रत आयशा रज़ि को दस हज़ार दिरहम भेजते।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 166 तलहा बिन उबैदुल्लाह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

(फ़र्हंग सीरत अज़ सय्यद फ़ज़ल अलरहमान पृष्ठ 147 ज़व्वार अकैडमी पब्ली केशन्ज़् कराची2003

हज़रत मुआवीया ने मूसा बिन तलहा से पूछा कि अब्बू मुहम्मद यानी हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह औने कितना माल छोड़ा? उन्होंने कहा कि बाईस लाख दिरहम और दो लाख दीनार। उनका सारा माल अनाज से हासिल होता था जो कई विभिन्न ज़मीनों से आय होती थी।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 166 तलहा बिन उबैदुल्लाह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

उनकी शहादत जंग जमल में हुई जैसा कि वर्णन हुआ है। इस का विस्तार इंशा अल्लाह भविष्य में वर्णन करूँगा क्योंकि उस की तफ़सील अलग ही वर्णन चाहती है ताकि हमारे ज़हनों में उभरने वाले जो कुछ सवाल हैं उनके जवाब मिल जाएं। इंशा अल्लाह वह भविष्य में वर्णन करूँगा।

अब जैसा कि मैं ने पिछले ख़ुत्बा में वर्णन किया था कि यह जो आजकल कोरोना वाइरस की महामारी फैली हुई है इस के लिए एहतियाती तदाबीर भी करते रहें और मस्जिदों में भी जब आएं तो सावधानी कर के आएं। हल्का सा बुख़ार इत्यादि हो, शरीर की तकलीफ़ हो तो ऐसी जगहों पर न जाएं जहां पब्लिक जगहें हैं और ख़ुद भी बचें और दूसरों को भी बचाएं और दुआओं की तरफ़ बहुत ध्यान दें। अल्लाह तआला दुनिया को आफ़ात से बचाए ।

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 3 अप्रैल 2020 ई पृष्ठ 5 से 9)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ 2 का शेष

मुअज़्ज़न से फ़रमाया कि तुम अशहदो अन ला इलाहा इल्लल्लाहो और अश्हदो अन्ना मुहम्मदन रसूलुल्लाह कहो तो उस के बाद हय्या अलस्सला न कहना बल्कि सल्लू फ़ी बुयूतेका कि अपने घरों में नमाज़ पढ़ो के अलफ़ाज़ कहना। अत: मानो लोगों को यह बात नई लगी और उन्होंने इस पर आश्चर्य किया इस पर हज़रत इब्न अब्बास रज़ि ने फ़रमाया कि यही काम उन्होंने अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी किया है जो मुझसे बेहतर थे। यद्यपि जुम्अ: पढ़ना ज़रूरी है मगर मैं नापसंद करता हूँ कि मैं भी कुछ शब्दों की तबदीली के साथ नापसंद करता हूँ कि तुम लोगों को इस तकलीफ़ में डालूं कि तुम कीचड़ और फिसलन में चलो। यह मुस्लिम में भी यह रिवायत कुछ शब्दों की तबदीली के साथ इस तरह आई है हज़रत इब्न अब्बास से रिवायत है कि उन्होंने बारिश वाले दिन में अपने मुअज़्ज़न से फ़रमाया कि अशहदो अन ला इलाहा इल्लल्लाहो और अश्हदो अन्ना मुहम्मदन रसूलुल्लाह कहो तो उस के बाद हय्या अलस्सला न कहना बल्कि सल्लू फ़ी बुयूतेका कि अपने घरों में नमाज़ पढ़ो के शब्द कहना। रावी कहते हैं कि लोगों को यह बात नई लगी तो हज़रत इब्न अब्बास ने फ़रमाया कि क्या तुम इस बात पर आश्चर्य करते हो। यह काम उन्होंने किया था जो मुझसे बेहतर थे यद्यपि जुम्अ: पढ़ना ज़रूरी है मगर मैं इसे पसंद करता हूँ कि तुम्हें इस हाल में बाहर निकालूं कि तुम कीचड़ और फिसलन में चलो।

अल्लामा इमाम नौई इस हदीस की व्याख्या में लिखते हैं कि और इस हदीस में बारिश इत्यादि की मजबूरी के कारण पर जुम्अ: को साकित करने की दलील मौजूद है और यही मसलक हमारा है लिखते हैं वह कि यही मसलक हमारा है और दूसरे फुक़हा का है जबकि इमाम मालिक का मोंक़फ़ उस के ख़िलाफ़ है। वालल्लाहो अअलमो बिस्सवाब

इसी तरह फुक़हा ने जुम्अ: और बाजमाअत को छोड़ने के उज़्रों में ऐसी बीमारी जिसके साथ मस्जिद में हाज़िर होना मुश्किल हो उस को शामिल किया है और इस की दलील अल्लाह तआला के इस इरशाद को क़रार दिया है कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए धर्म में किसी किस्म की तंगी जायज़ नहीं रखी। इसी कारण पर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बीमार हुए तो आप मस्जिद जाने से रुक गए और फ़रमाया कि अबूबकर से कहा कि वह लोगों की इमामत किराए। यह सही बुख़ारी में भी है और मुस्लिम में भी है यह हदीस। इसी तरह किसी बीमारी के पैदा होने से भयभीत आदमी भी माज़ूर क़रार दिया है और इस की दलील हज़रत इब्न अब्बास की वह रिवायत है जिसमें हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उज़्र की तफ़सीर ख़ौफ़ और बीमारी से फ़रमाया यह हदीस सुनन अबी दाऊद की है।

बहरहाल यह बीमारी जिसमें बीमारी फैलने का भी ख़तरा है और जिसके लिए हुकूमत ने भी कुछ नियम और क़ानून बनाए हैं और देश के कानून के अधीन उन पर चलना भी ज़रूरी है इन अवस्थाओं में जमा होना एक जगह जमा होना और नमाज़ बाजमाअत अदा करना या जुमा पढ़ना मुश्किल है लेकिन जैसा कि मैंने कहा अपने घरों में नमाज़ बाजमाअत की आदत डालें जहां बच्चों को यह इल्म होगा कि नमाज़ें पढ़ना ज़रूरी हैं और बाजमाअत पढ़ना ज़रूरी है और आजकल के हालात की वजह से हम मस्जिद नहीं जा सकते लेकिन इस फ़र्ज़ को अपने घरों में निभाना ज़रूरी है इस को पूरा करना ज़रूरी है इस पर खासतौर पर ध्यान दें। कई बार सफ़रों में ऐसे हालात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के भी आए थे जब आपने जुम्अ: अदा नहीं किया तो बहरहाल बहुत सारी रिवायते हैं ऐसी जिससे इस बारे में भी वज़ाहत होती है कि छूतछात की बीमारियों में जमा होना या बीमारियों में एक दूसरे से मिलना ठीक नहीं है इस के लिए अलग रहना चाहिए और अलग रखो। बहरहाल जैसा कि मैंने पहले भी कहा हम स्थायी तो यह नहीं छोड़ रहे और इस के लिए अलग से प्रबन्ध भी कर रहे हैं कि घरों में जुम्अ: अदा करें। मैं भी कोई प्रबन्ध करने की कोशिश करूँगा।

अब यह भी ज़रूरी है कि यह दुआ करें कि अल्लाह तआला अपना फ़ज़ल फ़रमाए जैसा कि पहले भी मैंने कहा कि अल्लाह तआला इस महामारी से दुनिया को जल्द पाक करे और सब दुनिया को इन्सानियत के तक़ाज़े पूरे करने वाला बनाए और ख़ुदा तआला को पहचानने वाले हूँ सब। अल्लाह तआला हम सबको इस की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

अस्सलाम अलैकुम वरहमतुल्लाह व बराकातुहो

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

प्रैस रिलीज़

कोरोना वायरस से निपटने के लिए सरकारी कानूनों का पालन, इस समय मुसलमानों की न केवल सामाजिक बल्कि धार्मिक ज़िम्मेदारी भी है।

इस्लाम एक फ़ितरत पर आधारित धर्म है जो दुआ के साथ-साथ सावधानी बरतने का भी आग्रह करता है। इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आज से लगभग 1400 वर्ष पूर्व हमें महामारी के समय सामाजिक दूरी बनाए रखने की शिक्षा दी है।

मुसलमानों का दुर्भाग्य

आज जबकि पूरी दुनिया कोरोना वायरस की महामारी की चुनौती से निपटने के लिए परिश्रम कर रही है और विभिन्न सरकारी तथा निजी संगठन इस अवसर पर विभिन्न प्रयत्न तथा एहतियाती उपाय कर रहे हैं और भारत की केंद्र सरकार और प्रांतीय सरकारें इस आपदा से निपटने के लिए अलग-अलग योजनाएँ बना रही हैं। और डॉक्टर, नर्स, पुलिस और विभिन्न सरकारी विभाग इस आपदा से दुनिया को बचाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं। वहां दूसरी ओर, भारत में हाल ही की कुछ घटनाओं के परिणामस्वरूप इस आपदा के अवसर पर इस्लाम को भी निशाना बनाया जा रहा है और इस्लाम को इस बीमारी के फैलाने के लिए दोषी ठहराया जा रहा है।

अधिकारियों का आज्ञापालन एक मुसलमान का धार्मिक कर्तव्य है

अहमदिया मुस्लिम जमाअत भारत सब से पहले केंद्र तथा राज्य सरकारों के प्रति अपना आभार व्यक्त करती है कि इस अवसर पर उन्होंने इस महामारी को नियंत्रित करने तथा लोगों की बेहतरी के लिए कई एहतियाती उपाय किए हैं। सरकार ने लोगों का मार्गदर्शन करते हुए बीमारी से निपटने के लिए कई तरह के दिशा-निर्देश भी दिए हैं। सरकार के सभी निर्देशों का पालन करना एक मुसलमान का धार्मिक कर्तव्य है। इस्लामी शिक्षाओं के मद्देनज़र इन निर्देशों का पालन करने के परिणाम स्वरूप, न केवल एक मुसलमान खुद को बीमारी से बचा सकता है, बल्कि यह मुस्लिम की सामाजिक ज़िम्मेदारी है और मानव जाति के साथ सहानुभूति की अभिव्यक्ति भी है जो वास्तव में शिक्षाओं का मूल है।

अहमदिया मुस्लिम जमाअत का बुनियाद और स्थापना का उद्देश्य

ऐसे समय में जब मुसलमान इस्लामी शिक्षाओं को भुला बैठे थे, अहमदिया मुस्लिम जमाअत भारत की स्थापना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी ने 1889 ई० में की थी ताकि दुनिया को इस्लामी शिक्षाओं की सच्ची भावना से अवगत कराया जा सके।

जमाअत की स्थापना शांति, सुरक्षा, न्याय और इस्लामी मूल्यों को बनाए रखने के लिए की गई थी। जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने इस जमाअत की स्थापना के केवल दो उद्देश्य बताए हैं अर्थात (1) लोगों को ख़ुदा तआला की पहचान कराते हुए उस ख़ुदा से जीवित संबंध स्थापित करने का मार्ग दिखाना तथा (2) मानवजाति के साथ पूर्ण सहानुभूति करना, जो वास्तव में इस्लामी शिक्षाओं का सार है। आज अल्लाह के फज़ल से भारत की अहमदिया मुस्लिम जमाअत दुनिया में वास्तविक इस्लाम का प्रतिनिधित्व करने के सौभाग्य प्राप्त कर रही है।

संक्रामक रोग से निपटने के लिए इस्लामी सावधानियां

इस्लाम ने हमेशा बीमारियों से निपटने के लिए जहां दुआओं पर ज़ोर देने का आग्रह किया है वहां सावधानी बरतने का भी निर्देश दिया है क्योंकि दुआ के साथ किया गया कार्य ही सफ़ल हो सकता है। इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने महामारी रोगों की रोकथाम क ले ए भी शिक्षाएँ प्रदान की हैं। उन्होंने कहा के यदि तुम्हें किसी भी स्थान पर महामारी के फैलने की सूचना मिले, तो तुम उस क्षेत्र में प्रवेश न करना और यदि तुम उस प्रभावित क्षेत्र में उपस्थित हो तो उस क्षेत्र से बाहर न निकलना। (सहीह बुखारी)

सरकारों की ओर से जो यात्रा-प्रतिबंध और Qurantine का दिशा निर्देश दिए जा रह हैं वे वास्तव में इसी शिक्षा से समानता रखते हैं।

इस्लाम महामारी के समय में सामाजिक दूरी बनाए रखने का आग्रह करता है हज़रत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बीमारों के लिए एक दूसरे से दूरी बनाए रखने के भी निर्देश है। एक व्यक्ति जिसे कुष्ठ रोग था, जब उस ने इस्लाम में सम्मिलित होने के लिए बैअत (हाथ पकड़ कर निष्ठा का इज़हार) करने की इच्छा व्यक्त की, तो आपने फ़रमाया कि उसकी निष्ठा स्वीकार कर ली गई है लेकिन इस व्यक्ति को अपने घर वापस चले जाना चाहिए। (सुन्न इब्ने माजा) एक अन्य अवसर पर, आप स.अ.अ. ने फ़रमाया कि एक बीमार व्यक्ति को एक स्वस्थ व्यक्ति से नहीं मिलना चाहिए जिसके परिणामस्वरूप, एक स्वस्थ व्यक्ति भी बीमारी से प्रभावित हो जाए। ये शिक्षाएँ केवल इंसानों के लिए नहीं बल्कि आप स.अ.अ. ने जानवरों के लिए भी यही शिक्षा दी है। (सहीह बुखारी) आज कुछ मुसलमानों को Qurantine तथा सामाजिक दूरी से सम्बंधित नियमों का पालन करना मुश्किल लग रहा है, जबकि हुज़ूर स.अ.अ. ने इसे धार्मिक दायित्व बताया है।

इस्लाम और स्वच्छता

इस्लाम हमें खुद को साफ-सुथरा रखने की प्रेरणा देता है और स्वच्छता को ईमान (आस्था) का हिस्सा क़रार देता है। पांच समय वुज़ू के दौरान एक व्यक्ति हाथ और नाक साफ करता है। हुज़ूर स.अ.अ. का यह आदर्श है कि जब आप छींकते थे तो अपना चेहरा ढंक लेते थे। ये क्रियाएं इन दिनों इस महामारी से खुद को बचाने के लिए आवश्यक चिकित्सक उपाय बन गई हैं।

इस्लाम दुआ (प्रार्थना) के साथ-साथ मेडिकल चिकित्सा की सलाह देता है

इस्लाम ने हमेशा बीमारी के इलाज के लिए दुआ के साथ-साथ दवाओं के उपयोग का आह्वान किया है। हज़रत मोहम्मद स.अ.अ. ने कहा है कि हर बीमारी की एक दवा होती है। अगर दुआ के साथ उस दवा का इस्तेमाल किया जाए तो अल्लाह उसे ठीक कर देता है। (सहीह मुस्लिम)

इस्लाम और महामारी के अवसर पर मानवजाति से सहानुभूति

इस्लाम ऐसे अवसरों पर मुसलमानों को बिना धार्मिक तथा क़ौमी भेदभाव के मानवजाति की सेवा की ओर भी ध्यान दिलाता है और प्रभावित लोगों की सहायता का आदेश देता है।

हज़रत उमर रज़ि० जब एक ऐसे क्षेत्र से गुज़रे जहां कुछ ईसाई कुष्ठ रोग से पीड़ित थे, तो उन्होंने तुरंत उन्हें वित्त पोषित किया और उन्हें चिकित्सा सुविधा प्रदान करने का आदेश दिया। अहमदिया मुस्लिम जमाअत द्वारा इस्लाम का सही प्रतिनिधित्व

ये हैं इस्लाम की सर्वोच्च शिक्षाएं जो पूर्णत: मानव स्वभाव के अनुरूप हैं। संक्रमित महामारियों में जो सावधानियां अपनाने की आवश्यकता है तथा जिन चिकित्सा सम्बन्धी निर्देशों का पालन आवश्यक है, इस्लाम और हज़रत मुहम्मद स.अ.अ. ने बड़े स्पष्ट रूप से उनका वर्णन कर दिया है। लेकिन आजकल कुछ मुसलमान चूंकि इस्लाम की इन वास्तविक शिक्षाओं को भूल गए हैं, इसलिए उनको महामारी के अवसर पर अपनी सामाजिक तथा धार्मिक ज़िम्मेदारियों का आभास नहीं है।

महामारी की पृष्ठभूमि में वैश्विक जमाअत अहमदिया के इमाम की सलाह

अहमदिया मुस्लिम जमाअत भारत इस्लाम की शिक्षाओं के अनुसार काम

शेष पृष्ठ 12 पर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर जर्मनी, जुलाई 2018 ई (भाग-9)

मेरी ज़िन्दगी में यह पहला अवसर है कि इस प्रकार के प्रोग्राम में शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली,इस जलसा में समस्त तक़रीरों को यथा सम्भव ध्यान से सुनने की कोशिश की है और विशेषत: ख़लीफ़तुल मसीह के ईमान वर्धक शब्द आपकी कशिश वाली आवाज़ और आपकी हिदायतें मेरे दिली सुकून तथा सन्तोष और चैन का कारण बनते रहे। (बोसनिया से एक कैथोलिक ईसाई बोरिस लेवा साहिब)

मेरी नज़र हुज़ूर की शख़्सियत पर पड़ी तो मेरी आँखों से अपने आप आँसू जारी हो गए,और ज़बान पर यह शब्द थे कि "यह आसमानी फ़रिश्ता हैं यह ज़मीनी इन्सान नहीं हैं।"

मुझे जलसा में शामिल हो कर यह एहसास हो गया है कि जलसा के माहौल में वह शक्ति और प्रभाव है कि रुहानी तौर पर मुर्दा इन्सान में ज़िन्दगी की रूह चली आती है। (बोसनिया से यमीना साहिबा)

मुझे बहुत सारे धार्मिक इज्तिमाओं में शामिल होने का अवसर मिलता रहा है, मगर जमाअत के जलसा में और अन्य इज्तिमाओं में अन्तर यह है कि अन्य इज्तिमाअ केवल एक भीड़ हैं और जमाअत के जलसा में रूहानियत होती है, ऐसी रूहानियत मुझे दुनिया में और कहीं नहीं मिली। जमाअत का जलसा उम्मत के इत्तिहाद तथा आपसी मुहब्बत भाईचारा की ज़िन्दा तस्वीर है।

(बोस्निया के मुस्तफ़ा साहिब का ईमान वर्धक प्रतिक्रिया)

जलसा सालाना जर्मनी पर आने वाले अहमदी , ग़ैर अहमदी और ग़ैर मुस्लिम सम्मानीनय मेहमानों के बहुत ईमान वर्धक प्रतिक्रियाएं।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

मुझे हुज़ूर अनवर की तक़रीरें पसंद आईं।

हुज़ूर का फ़रमाना कि बैठ जाएं और इतने बड़ी भाड़ का शीघ्र बैठ जाना , यह दुनिया में कहीं देखने को नहीं मिलता।

बेशक में ईसाई हूँ , लेकिन मुझे हुज़ूर की तक़रीरें बहुत पसंद आईं, हुज़ूर की दुआएं दिल पर प्रभाव करने वाली थीं, तिलावत क़ुरआन करीम भी मुझे बहुत पसंद आई इसी तरह उस अनुवाद भी।

प्रशंसा योग्य बात यह है कि छात्रों को इनामों और मैडल देने के लिए ख़लीफ़तुल मसीह ख़ुद खड़े हुए,मेरी इच्छा है कि हुज़ूर की समस्त दुआएं क़बूल हो जाएं ताकि और दुनिया में अमन स्थापित हो जाए

हर साल मुझे नई से नई बातें सीखने को मिलती हैं। मैं तक़रीरों को बहुत ध्यान से सुनती हूँ क्योंकि में एक Physiotherapist और Psychologist हूँ।

मैं इन तक़रीरों में बताई जाने वाली जमाअत अहमदिया की शिक्षा के द्वारा,अपने हर मरीज़ के समस्याएँ बेहतर रंग में हल कर सकती हूँ। इसके अतिरिक्त इन तक़रीरों से में अपने लिए भी लाभदायक नसीहतें इकट्ठी कर के ले जाती हूँ जो मेरी ज़ाती और प्रोफ़ैशनल ज़िन्दगी में बहुत सहायक होती हैं।

मुझे पहली बार जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होने का अवसर मिला, मैं सारी चीज़ें देखकर हक़ीक़त में हैरान रह गई हूँ,बेशक मैं ईसाई हूँ लेकिन जमाअत अहमदिया से बहुत प्रभावित हुई हूँ।

मुझे हुज़ूर अनवर की तक़रीरें बहुत पसंद आएं, खासतौर पर में इस बात से प्रभावित हुई कि छात्रों को हुज़ूर ने ख़ुद सनदें और मैडल दिए, मुझे नज़्में भी अच्छी लगीं।

मेहमान नवाज़ी के प्रबन्ध बहुत ही उत्तम थे, तीनों दिन के इज्लास बहुत अच्छे गुज़रे, तक़रीरें बहुत ही शिक्षा प्रदत थीं और उम्दा तौर पर तैय्यार की गई थीं।

हुज़ूर की तक़रीरें बहुत ही प्रभावित करने वाली थीं और उनमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत के बहुत दिलचस्प घटनाएं और उदाहरण थे,मैं आप सब के पुरजोश स्वागत और उच्च आचरण से ख़ुश हूं।

इस जलसा में शामिल हो कर यूं महसूस हो रहा था कि मैं एक रुहानी सफ़र में शामिल हूँ।

जिस ने मेरे एहसासों को ज़िन्दा कर दिया है, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह की तक़रीरें सुनकर यूं लगा कि जैसे अल्लाह तआला की ज़ात क़रीब ही है

बोस्निया के वफ़द की हुज़ूर से मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार 5 बजकर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के मर्दाना हाल में पधारे जहां बोस्निया से आने वाले वफ़द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया। बोस्निया से इस साल अल्लाह के फ़ज़ल से एक स्पेशल बस और के द्वारा हवाई जहाज़ कुल 74 मर्दों पर आधारित वफ़द जलसा में शामिल हुआ था

एक मेहमान ने निवेदन किया कि बोस्निया और कोसोवो के लोगों पर बहुत अत्याचार हुआ है। नस्ल समाप्त हुई है। ग्यारह जुलाई को इस की याद मनाते हैं और मुसलमान एक जगह इकट्ठे होते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मुसलमान इकट्ठे हो कर रहें। तोड़ फोड़ और हमले करने से कुछ न होगा। एक अच्छा लीडर मिल जाए जो सबको जमा करे और मुत्तहिद करे तो फिर आप कामयाब होंगे।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया ये बताएं कि क्या आपको भविष्य में कोई लीडर नज़र आ रहा है ? इस पर लोगों ने निवेदन किया कि एक मुफ़्ती साहिब हैं। इस पर हुज़ूर अनवर फ़रमाया: जो भी है अल्लाह करे अच्छा काम करे , हिक्मत से काम करना पड़ेगा

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जो असाईलम सीकरज़ इन यूरोपियन देशों में आ रहे हैं एक ज़माना में इन लोगों ने अपनी लेबर के लिए ख़ुद मंगवाए थे। इसलिए जो आने वाले मेहनती लोग हैं, अब उनका भविष्य तो यहां है। वे अपने मज़हब पर अपनी रिवायतों पर स्थापित रहते यहां integrate होने की कोशिश करें।

बोरिस लेवा नशीश साहिब (Boris Livanchich) एक कैथूलिक ईसाई हैं और अपनी फ़ैमिली के साथ जलसा में शामिल हुए थे। महोदय ने अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहा कि मैं विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के लिए दिल की गहराईयों से नेक इच्छाओं का इज़हार करता हूँ। और अपनी तरफ़ से इसी तरह अपनी फ़ैमिली की तरफ़ से इस महान जलसा में शामिल होने की दावत के लिए शुक्रगुज़ार हूँ। मेरी ज़िन्दगी में यह पहला अवसर है कि इस किस्म के प्रोग्राम में शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली। इस जलसा में समस्त तक़रीरों को यथा श्कति ग़ौर से सुनने की कोशिश की है और विशेषत: ख़लीफ़तुल मसीह के रूह-परवर शब्द आपकी कशिश वाली आवाज़ और आपकी नसीहतें मेरे दिली

सुकून तथा सन्तोष और चैन का कारण बनते रहे।'

महोदय ने निवेदन किया कि जलसा के समस्त प्रबन्ध, रिहायश , विभाग सामान उठाना इत्यादि पर रशक आता है कि किस तरह इस क़दर उत्तम रंग में ऐसा बड़ा निज़ाम चल रहा था। अब हम दिल की गहराई और मुहब्बत और इस उम्मीद के साथ बोसनिया वापस जा रहे हैं कि भविष्य में भी इस ख़ूबसूरत जलसा में शामिल होने की तौफ़ीक़ मिलेगी।

एक दोस्त ने निवेदन किया कि मैं दूसरी बार जलसा में शामिल हुआ हूँ। ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट के साथ मिलकर बहुत अच्छे रंग में काम हो रहा है।

एक दोस्त ने सवाल किया कि बलक़ान स्टेटस में मुसलमानों का भविष्य क्या है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मेहनत करें और मैदान अमल में मेहनत करके ,तरक़्क़ी करके आगे बढ़ने की कोशिश करें। क़ुरआन करीम की शिक्षा पर अनुकरण करें। मुसलमानों ने इस को भुला दिया है। मेहनत और ईमानदारी दो चीज़ें पैदा हो जाएं तो फिर तरक़्क़ी ही तरक़्क़ी है। जिस मसीह तथा महदी के आने की नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़बर दी थी उस को स्वीकार करें तो फिर देखें तरक़्क़ी करेंगे। हम तो समझाते हैं और कोशिश भी करते हैं लेकिन हमारे पास कोई हुकूमत तो नहीं है। लेकिन बाक़ी मुसलमानों की तुलना में हम आर्गनाइज़ड हैं और निरन्तर तरक़्क़ी कर रहे हैं और आगे बढ़ रहे हैं।

फ़ारूक़ दरमैच साहिब (Faruk Durmic) एक public prosecutor हैं। महोदय ने अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहा: यह मेरा पहला जलसा था। जलसा के समस्त प्रबन्ध ,शामिल होने वाले , काम करने वालों के इख़लास ने मुझ पर बहुत गहरा सकारात्मक प्रभाव छोड़ा है कि दुनिया भर से इस बड़ी संख्या में यहां लोग जमा हुए थे मगर एक भी नाख़ुशगवार घटना नहीं हुई। आपकी जमाअत समाज की रुहानी तरक़्क़ी विशेषत: समस्त दुनिया के मुसलमानों की दीनी तर्बीयत, इल्मी ,साईंसी सभ्याचारक रहनुमाई पर काम कर रही है। मैं आपकी जमाअत को इस महान जलसा के कामयाब आयोजन पर दिल की गहराई से मुबारकबाद पेश करता हूँ और जमाअत की और अधिक तरक़्क़ी के लिए दुआ करता हूँ।

यासमीन सपाहेच साहिब (Yasmin Spahich) एक स्थानीय NGO के संस्थापक और सदर हैं और बोस्निया में जमाअत के साथ मिलकर फ़लाही काम करते हैं। महोदय ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा :मेरे लिए यह बात गर्व तथा प्रशंसा का कारण है कि मुझे पिछले तीन सालों से जलसों में शामिल होने की तौफ़ीक़ मिल रही है और सबसे बड़ी बात यह है कि हर साल ख़लीफ़तुल मसीह से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। ख़लीफ़तुल मसीह के दर्शन तथा निकटता एक ख़ास रुहानी तजुर्बा है और सुकून वाली फ़िज़ा में गुज़ारे हुए कुछ लम्हे ज़िन्दगी की हसीन यादें हैं। आप का इस्लाम, तथा इस्लाम के संस्थापक से इशक़ और इसी इशक़ को फैलाना आपकी मुहब्बत बिखेरने वाले शब्द में होता है। इसी तरह हज़रत अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र सीरत के बारे में हुज़ूर अनवर ने जो नसीहतें फ़रमाएं वे दिल में उतर रही थीं। यही वह काम है जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम करते थे। मैं ख़ुदा तआला से दुआ करता हूँ कि अगला जलसा इस से भी बेहतर हो और यह जलसा उम्मत मुहम्मदिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैं क़ुव्वत और एकता पैदा करने का कारण हो।

बोस्निया के स्थानीय मुअल्लिम ने हुज़ूर अनवर की सेवा में अपने पिता साहिब और पत्नी की तरफ़ से सलाम पहुंचाया और निवेदन किया कि मैं जमाअत की किस तरह बेहतर रंग में सेवा कर सकता हूँ? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अहमदियत का पैग़ाम फैलाओ, दुआ करो, मेहनत से काम करो। आप जो भी प्राप्त कर सकते हैं दुआ से ही कर सकते हैं। पांचों नमाज़ों के इलावा नवाफ़िल तहज्जुद भी अदा करें। जमाअत के लिट्रेचर तथा किताबों का अध्ययन करें और अपने दीनी इल्म में वृद्धि करें।

यमीना चाओशैवेच साहिबा (Emina Chaoshevich) छात्रा हैं और अपनी माता के साथ जलसा में शामिल हुई थीं। महोदया ने वर्णन किया औरतों में हुज़ूर अनवर के ख़िताब के बाद जब नारे लगाए जा रहे थे , तो मैंने सोचा कि इस क़दर शोर करने की क्या ज़रूरत है। लेकिन थोड़ी देर बाद जब हुज़ूर अनवर हाल से बाहर तशरीफ़ ले जा रहे थे तो मेरी नज़र हुज़ूर की शख़्सियत पर पड़ी तो मेरी आँखों से अपने आप आँसू जारी हो गए,और ज़बान पर यह शब्द थे कि 'यह आसमानी फ़रिश्ता हैं यह ज़मीनी इन्सान नहीं हैं।'कहने लगीं: मुझे जलसा में शामिल हो कर यह एहसास हो गया है कि जलसा के माहौल में वह शक्ति और प्रभाव है कि रुहानी तौर पर मुर्दा इन्सान में ज़िन्दगी की रूह चली जाती है।

आर्मीन मोज़केश साहिब (Armin Muzkich) एक शहर Zenica में पब्लिक रेलेशन ऑफीसर (Public Relation Officer) हैं। उन्होंने अपने भावनाओं का इज़हार करते हुए कहा यह जलसा और इस के समस्त प्रबन्ध ख़ुद अपने आप में एक महान अनुभव हैं।

जमाअत के लोग जर्मनी की मेहमान नवाज़ी और इस्लाम की सेवा के लिए दिली भावनाओं और क़ुर्बानियों ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। जलसा की तक़रीरें बहुत उत्तम थीं और उनमें वर्णन की गई बातों का सम्बन्ध हमारी ज़ाती ज़िन्दगियों से था। इसी तरह मेहमानों के लिए रिहायश ,ट्रांसपोर्ट इत्यादि का प्रबन्ध बहुत ही प्रभावित करने वाला और आराम देने वाला था। ये सारी बातें में दिल की गहराईयों से और दिली दुआओं के साथ लिख रहा हूँ।

इमीना चाऊशी साहिबा (Elma Krehmiche) ने अपनी भावनाओं का इस तरह इज़हार किया कि मैं इस अवसर से लाभ उठाते हुए जमाअत अहमदिया का शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ कि मुझे इस महान जलसा में शामिल होने की दावत दी गई। मेहमान नवाज़ी जलसा के बारे में समस्त प्रबन्धों ने मुझे आश्चर्य जनक तौर पर प्रभावित किया है और विशेषत: मेरा यह Week End ऐसे लोगों के बीच गुज़रा है कि जिनके चेहरा पर हमेशा मुस्कुराहट थी। और यह माहौल ऐसा था जहां हर एक यह महसूस कर रहा था कि गोया वह अपने घर में ही निवासी है।

एक नौजवान जिसकी पिछले साल शादी हुई है इस ने बताया कि मेरी अहमदी लड़की से शादी हुई है। मेरी पत्नी ने बैअत की थी। मैं हुज़ूर अनवर के लिए दुआ करता हूँ कि ख़ुदा तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती वाली लम्बी आयु दे और हुज़ूर का साया हम पर सलामत रखे। महोदय ने अपनी पत्नी के लिए भी दुआ की दरख़ास्त की।

एक नौ अहमदी ने निवेदन किया कि हुज़ूर अनवर ने उनके कादियान जाने की मंज़ूरी दी है। महोदय ने अपने लिए दुआ की दरख़ास्त की।

स्थानीय मुअल्लिम साहिब की माता ने निवेदन किया कि जलसा में हमने देखा कि अहमदी बच्चों की किस तरह तर्बीयत होती है। बच्चे किस तरह सेवा कर रहे थे। हमारे लिए दुआ करें कि हम माएं भी अपने बच्चों की ऐसी ही तर्बीयत करने वाली हूँ।

एक ग़ैर अहमदी औरत ने निवेदन किया कि हमें इस जलसा में शामिल हो कर रुहानी शिफ़ा मिलती है। हमारे अंदर रूहानियत के निशान ज़ाहिर होते हैं। हमारी तर्बीयत होती है , हमें ख़ुदा मिलता है। हुज़ूर ख़ुदा के भेजे हुए हैं। आप जिस तरफ़ क़दम बढ़ाते हैं इसी तरफ़ बरकतें होती हैं। ख़ुदा के फ़रिश्ते आपके साथ हैं। ये सब हमने देखा है।

अमीना मोई कैच साहिबा (Amina Muikich) बोस्निया से इस साल जलसा में शामिल हुई थीं। उन्होंने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा: जहां तक इस किस्म का जलसा और प्रोग्रामों का सम्बन्ध है मेरे लिए यह एक नई बात थी कि इस क़दर बड़े प्रबन्ध बहुत ही मुनज़्ज़म और पर अमन तथा शान्ति वाले माहौल में हो रहे थे। जलसा ने मेरे दिल पर गहरा प्रभाव छोड़ा है और मुझे बहुत ही प्रभावित किया है। आप लोगों के बीच गुज़रने वाले ये चार दिन बहुत ही अच्छे थे। मैं दिल की गहराई से आप सब की शुक्रगुज़ार हूँ।

वेलीदा कुर्तागच साहिबा (Velida Kurtagich) बोस्निया से जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुई थीं। महोदया ने अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहा: यद्यपि मैं अहमदी नहीं हूँ लेकिन मैंने जलसा के माहौल से बहुत लाभ उठाया है। मैं उम्मीद करती हूँ कि अल्लाह तआला मुझे सीधे रास्ते की तरफ़

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 16 April 2020 Issue No.16

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

हिदायत देगा। मैं आपसे दुआ की दरख़ास्त करती हूँ कि अल्लाह तआला हिदायत की राह की तरफ़ मेरी रहनुमाई करे और में एक मिसाली मुसलमान बन सकूं।

अदीब साहिब बोस्निया के वफ़द के साथ शामिल हुए थे। महोदय ने अपनी भावनाओं को इस तरह व्यक्त किया कि मेरी ख़ुशक़िसमती है कि इस साल मुझे जलसा सालाना में शामिल की तौफ़ीक़ मिली। मैं सब के समाने कह सकता हूँ कि जमाअत अहमदिया के मेंबरों की मुख़लिसाना सेवा मेरे लिए हैरान करने वाली थी कि इस बड़े प्रबन्ध को उन्होंने किस क़दर आसानी के साथ सरअंजाम दिया है। इतने सुकून वाले माहौल ने मेरे दिल पर बहुत गहरा प्रभाव छोड़ा है। जलसा गाह और इर्दगिर्द के माहौल में सफ़ाई का बहुत अच्छा प्रबन्ध था। सैक्योरिटी में डयूटी देने वाले लोगों बहुत ही प्रसन्नता और मुहब्बत के साथ अपना काम कर रहे थे। जलसा के दिनों में मुझे कहीं भी किसी किस्म की बदमज़गी या अशान्ति नज़र नहीं आई। आख़िर पर मेरे हिस्सा में यह सौभाग्य भी आया कि मुझे इमाम जमाअत अहमदिया के साथ मुलाक़ात का अवसर मिला और मेरी प्रशंसा की सीमा नहीं थी जबकि मुझे आपसे हाथ मिलाने की तौफ़ीक़ मिली। मेरे लिए यह बहुत बड़ा सम्मान है। अल्लाह तआला आप सबको बदला प्रदान करे और जिस उद्देश्य के लिए आप इकट्ठे हुए हैं आप को इस में करे।

मुस्तफ़ा साहिब का जन्म 1933 का है। महोदय हुज़ूर अनवर के दर्शन के शौक़ में के बस के द्वारा सफ़र कर के इस जलसा में शामिल हुए थे। मुलाक़ात के दौरान महोदय ने निवेदन किया था कि में एक अनपढ़ बूढ़ा इन्सान हूँ। मुझे बहुत सारे दीनी इज्तिमाओं में शामिल होने का अवसर मिलता रहा है। मुझे हज की भी तौफ़ीक़ मिली। मगर जमाअत के जलसा में और अन्य इज्तिमाओं में फ़र्क़ यह है कि अन्य इज्तिमा केवल एक भीड़ है और जमाअत के जलसा में रूहानियत होती है। ऐसी रूहानियत मुझे दुनिया में और कहीं नहीं मिली। जमाअत का जलसा उम्मत के इत्तिहाद तथा आपसी मुहब्बत एवं भाईचारा की ज़िन्दा तस्वीर है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अल्लाह तआला आपको सेहत दे। उम्र में इज़ाफ़ा करे और अपनी क़ौम के लिए दुआएं भी क़बूल फ़रमाए।

फ़ाइक़ साहिब एक ग़ैर अज़ जमाअत नौजवान हैं और वकालत की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इस साल जलसा में पहली बार अपने भाई के साथ शामिल हुए थे। महोदय ने अपनी भावनाओं को इस तरह इज़हार किया कि आपके ख़लीफ़ा कोई मामूली इन्सान नहीं हैं , उनका चलना और उनकी बातचीत में एक विशेष बात है। उनको देखकर लगता है कि उनकी फ़िरासत और दूर अंदेशी हम जैसे आम इन्सानों से कहीं बढ़कर है। और मैं यक़ीन से कह सकता हूँ कि जो बातें हमें नज़र नहीं आतीं उस का इल्म उनको दिया जाता है। उनके चेहरा में एक नूर है जो बिलकुल स्पष्ट है।

एक बच्चा कुर्सी पर था। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए फ़रमाया कि बहुत लंबे हो। बच्चा ने निवेदन किया कि मैं एक अच्छा अहमदी बच्चा बनना चाहता हूं। मेरे लिए दुआ करें। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अल्लाह तआला आपको अच्छा अहमदी बनाए। सेवा करने वाले हूँ, अहमदियत का पैग़ाम अपनी क़ौम में फैलाने वाले हों। बच्चा ने निवेदन किया कि मैं हुज़ूर से बहुत मुहब्बत करता हूँ

बोस्निया के वफ़द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ यह मुलाक़ात 6 बजकर 15 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर वफ़द के मैंबरों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य पाया और हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

(शेष.....)

☆ ☆

पृष्ठ 9 का शेष

करनेवाली जमाअत है। सरकारी नियमों का पालन इस जमाअत की एक विशिष्ट विशेषता है। इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने 27 मार्च 2020 ई० को एक विशेष संदेश में, विश्व के 213 देशों में रहने वाले अहमदियों को निर्देश दिया कि जो भी उनके देश के कानून हैं उन का पालन करना हर अहमदी का कर्तव्य है। उन्होंने सलाह दी कि अहमदी मुसलमान नियमित रूप से अपनी पाँच नमाज़ें और जुमा की नमाज़ अपने घरों में, अपने परिवारों के साथ अदा करें और सरकार के नियमों के अनुसार अपने घर में ही रहें। और इन दिनों में अपने ज्ञान को बढ़ाने का प्रयत्न करें। इसके साथ-साथ वैश्विक जमाअत अहमदिया के इमाम ने बहुत अधिक दुआएँ करने का निर्देश दिया है।

लॉक डाउन का पालन करने में अहमदी लोग सबसे आगे हैं

क़ादियान, जो अहमदिया मुस्लिम जमाअत भारत का मुख्यालय है, यहाँ पर भी सरकारी नियमों की पूरी तरह से पाबंदी की जा रही है। अहमदी मुसलमान अपने घरों में ही नमाज़ें पढ़ रहे हैं। ज़िले के शीर्ष पुलिस अधिकारी ने मीडिया में बयान दिया कि "क़ादियान ज़िले भर में लॉकडाउन आदेशों का पालन करने में सबसे आगे है। "न केवल क़ादियान बल्कि पूरे भारत में अहमदी मुसलमानों ने अपने अधिकारियों के निर्देशों का पालन किया है। कोलगाम कश्मीर में एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने एक अहमदी के अंतिम संस्कार में अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए कि "इस जमाअत ने लॉकडाउन के कानूनों का पूरी तरह से पालन किया है। इस जमाअत के लोगों को मेरी ओर से कोई निर्देश नहीं दिए बल्कि उन्होंने सभी अनुशासन व्यवस्थाएं खुद बनाई हैं। "

जमाअत अहमदिया भारत की राहत सेवाएँ

पूरे देश में,अहमदिया मुस्लिम जमाअत के युवाओं के संगठन,"ख़ुद्दाम-उल-अहमदिया" तथा जमाअत अहमदिया का राहत सेवा विभाग Humanity First, ज़रूरतमंदों की भरपूर सहायता कर रहे हैं।

आरम्भ से ही, जब भारत मेंइस महामारी का अधिक प्रभाव नहीं था, तब से ही इमाम जमाअत अहमदिया के मार्गदर्शन में होम्योपैथी की महामारी निवारक दवाओं को पूरे भारत में वितरित किया गया है। इन दवाओं को कम से कम पचास हज़ार लोगों तक पहुंचाया गया। पूरे भारत में15 से अधिक स्थानों पर स्वास्थ्य विभाग के साथ मिल कर, जमाअत अहमदिया ने लोगों मेंइस बीमारी के प्रति जागरूकता पैदा करने की कोशिश की है। ग्रामीण क्षेत्रों में, 2000 से अधिक लोगों को जमाअत अहमदिया द्वारा मास्क तथा हैंड सैनिटाइज़र मुफ्त प्रदान किए गए हैं। लॉकडाउन के बाद भी जमाअत अहमदिया के स्वयंसेवकों ने, संबंधित विभाग की अनुमति से देश भर में15 हज़ार से अधिक ज़रूरतमंद परिवारों को दो सप्ताह का आवश्यक राशन पहुँचाया है और 40,000 सेअधिक गरीबों को खाना खिलाया है।

आज ज़रूरत इस बात की है कि कोरोना वायरस की आपदा से निपटने के लिए हम सभी ख़ुदा से अधिक से अधिक दुआ करें और सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पूरी तरह से पालन करें. और इसी प्रकार हम सबको एकजुट होकर इस महामारी से निपटने की कोशिश करनी चाहिए। अल्लाह तआला इस विपदा से दुनिया को बचाए। आमीन

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें-

के. तारिक अहमद

प्रेस एंड मीडिया विभाग, अहमदिया मुस्लिम जमाअत भारत

☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆

☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad